

श्रीः ।

ॐ षट्पञ्चाशिका

श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशो  
विरचिता ।

पं-रामकृष्णशर्मकृतया

सुबोधिनीभाषाटीकया समलंकृता ।

सा च

क्षेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) मन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।

शके १८२२, सवत् १९५७.

रजिस्टरीका हक 'श्रीवेङ्कटेश्वर' मन्त्रालये स्वामीन रक्खाहे

किं नम

श्रीः ।

# ❀ षट्पञ्चाशिका ❀

भाषाटीकासहिता ।



श्लोकः ।

प्रणम्य लंबोदरमादरेण सूर्यादिदेवान्स्व-  
गुरुंश्च नत्वा ॥ सुबोधिनीं नाम करोमि  
टीकां विद्यार्थिनां शीघ्रसुबोधनाय ॥ १ ॥

अथ ग्रन्थारम्भः ।

प्रणिपत्य रविं मूर्ध्ना वराहमिहिरात्मजेन-  
पृथुयशसा ॥ प्रश्ने कृतार्थगहना परार्थमु-  
द्दिश्य सद्यशसा ॥ १ ॥

टीका—वराहमिहिराचार्यका जो मैं पृथुनाम पुत्र हूँ  
॥ रवि जो सूर्य तिनको मस्तक झुकायके नमस्कार

करताहूं. किसके अर्थ? प्रश्नकी जो विद्या है ताको संसारके विषे जो लोक हैं तिन्हें शीघ्रहीसे प्राप्त होय तिनके अर्थ. कैसे हैं वे पृथु कि निर्मल हे यश जिनका, और भूतविद्याके सूर्य हैं गुण जिनके ॥ १ ॥

च्युतिर्विलग्नाद्विबुकाच्चवृद्धिर्मध्यात्प्रवासोस्तमयान्निवृत्तिः ॥ वाच्यग्रहैः प्रश्रविलग्नकालाद्ब्रह्मप्रविष्टो हिवुके प्रवासी ॥ २ ॥

टीका—( च्युतिर्विलग्नात्— ) प्रथम लग्न जो है ताते इतनी बात कहनी चाहिये; ग्रामका चलना, मेघकी वर्षा, बन्दिमोक्ष अर्थात् कैदसे छूटना इतनी वस्तु लग्नसे देखनी चाहिये. जो चर लग्न होय अथवा चरराशि होय तो पराये ग्रामसे चलै. मेघकी वर्षा पूछे तो मेघकी वर्षा होय और बन्दी मोक्षकी पूछे तो बन्दी बन्धनसे छूटे और जो स्थिर राशि होय तो पहिले कार्य न होय संपूर्ण कार्य स्थिर अर्थात् देरसे होय ॥ ( हिवुकाच्चवृद्धिः ) हिवुक कहिये चौथे स्थानमे इतनी बातोंकी वृद्धि.

भाषाटीकासहिता । ३१३  
 होती है संतानादिककी वृद्धी, घोडा, बैल, अन्न, वस्त्र, विवाह  
 आदि और जो संपूर्ण प्रश्नोंका विचार चतुर्थभवनसे  
 समझलेना चाहिये कि चर लग्न है वा चरके नवमां-  
 रा में होय तो वृद्धि कहिनी और स्थिर होय तो  
 देरसे कहिये ॥ ( मध्यात्प्रवासः ) मध्यनाम दशम स्था-  
 नका है जो कोई परदेशीका प्रश्न करै कि कब आवैगा  
 तो शीघ्र आवे चरसे और चरांशसे; और स्थिरसे देरसे  
 आवै. चर और चरांशसे राजाकी फौजमें गया  
 होय पूछै कब आवैगा तो चरसे और चरांशसे शीघ्रही  
 आवे, और स्थिर राशिसे और स्थिरांशसे देरमें कहौ  
 और जिस राशिका स्वामी होय इतनेही दिनमें आवना  
 कहौ आवैगा और जो निकट दस कोसपर होय तो  
 जितने दिनमें चंद्रमा केन्द्रमें आवे तितनेही देरमें आवे चं-  
 द्रमासरिस प्रवासी घरमें आवै ॥ अब सप्तमस्थानसे विचार  
 कहते हैं इतनी वस्तु सप्तमस्थानसे विचार करना योग्य है  
 ग्रामसे चलना, रोगी मरेगा कि नहीं, कष्ट दूर होगा

प्र (९) पट्टपञ्चाशिका १९५

नहीं, गई वस्तु मिलेगी कि नहीं, ये सब बातें सप्तमस्थानसे  
विचारनी चाहिये और जो स्थिरराशि होय तौ निवृत्ति  
और जो चर होय तौ प्रवृत्ति कहना और जो लग्नका  
स्वामी देखता होय तौ कार्य होगा. प्रश्नलग्नसे १० में  
३ तीसरे ५ विश्वे, ९ वें ५ वें १० विश्वे, ० अथवा  
४ वा ८ विश्वे १५ और ७ वें विश्वे २० कार्य हो-  
यगा ॥ और तनुस्थानसे तनुकी ॥ धनस्थानसे  
धनकी ॥ सहजस्थानसे भाई बहिनका ॥ मित्रस्थानसे  
गोडा, खेती, चतुर्थस्थानसे ॥ बेटाबेटी, गर्भ, वियां, सुत-  
स्थानसे ॥ वैरी, गाय, बैल, भैंस, रिपुस्थानसे ॥ स्त्री,  
बनिज, झगडा, विवाह सप्तमस्थानसे ॥ बावडी, कूआ,  
तलाव अष्टमस्थानसे ॥ धर्म करना नवमस्थानसे ॥  
राज्य, क्रिया, पिताका प्रश्न दशमस्थानसे ॥ व्याज,  
द्रव्यलाभ, पांडित्य, वाद, विवाद ये एकादशस्थानसे  
अर्थात् एकादश भवनसे ॥ विवाह, कर्कशकर्म, व्यय  
अर्थात् खर्च ये संपूर्ण विचार द्वादशभवनसे जानने  
चाहिये ॥ २ ॥

योयोभावःस्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा  
स्यात्तस्यतस्यास्ति वृद्धिः ॥ पापैरे-  
वं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां  
जन्मतो वा ॥ ३ ॥

टीका—एक लग्नके द्वादश भाव होते हैं सौम्यजिस  
भावका स्वामी अपने घरको देखता होय अथवा बैठा  
होय तिसरा भावकी वृद्धि करै है. सौम्य ग्रह होय अथवा  
क्रूर ग्रह होय तौ वृद्धि करै अथवा पापी देखै तो प्रथम  
भावकी हानि करै ॥ अब शुभ ग्रह कितने हैं सो कहते  
हैं ॥ बुध, बृहस्पति, शुक्र और शुक्रपक्षका चंद्रमा  
पाप ग्रह क्षीण चंद्रमा, सूर्य, मंगल, शनैश्वर, राहु, केतु  
और जो ये ग्रह बुध शुक्रसहित होंय तौ शुभग्रह कहूँ  
ना चाहिये । यदि पापग्रह संग होंय तौ पापी कहूँ  
और जातकमें भी इसी प्रकार जानना. शुभ ग्रह शुभ-  
कर्ता और पापग्रह हानिकर्ता होते हैं ॥ ३ ।

अथ कार्यशुभाशुभविचारमाह ।

सौम्येविलग्नयेदिवास्यवर्गेशीर्षादयेसिद्धिमु-  
पैतिकार्यम् ॥ अतोविपर्यस्तमसिद्धिहेतुः  
कृच्छ्रेणसंसिद्धिकरंविमिश्रम् ॥ ४ ॥

टीका-जो प्रश्नके समय तात्कालिक लग्नमें शुभग्रह  
बैठा होय अथवा शुभ ग्रहकी राशि या घरमें होय और  
शीर्षादय लग्नमें होय शीर्षादय लग्न ये हैं ५ । ६ । ७ । ८ ।  
११ ये होंय तो कार्यकी सिद्धि कहिये और ये न होंय अ-  
र्थात् उलटे होंय तो कार्यका नाश कहिये और जो मिली  
होंय तो बड़े कष्टसे कार्य होगा. ये सब बातें शुभाशुभ-  
ग्रहकी अधिकता देखकर फल कहनी चाहिये ॥ ४ ॥

अथ नष्टवस्तुलाभज्ञानमाह ।

कोणस्थितः पूर्णतनुः शशाङ्को जीवेन दृष्टो य-  
दिवासितेन ॥ क्षिप्रं प्रणष्टस्य करोति लब्धिं  
लाभोपयातो बलवान् शुभश्च ॥ ५ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि गई गई वस्तु मिलेगी कि नहीं ? तब लग्नका विचार करिये. जो लग्नमें परिपूर्ण चंद्रमा बैठा होय वा अपनी होरामें बैठा होय वा बृहस्पति वा शुक्र देखता होय तो गई वस्तु शीघ्रही मिले अथवा शुभ ग्रह ग्यारवें स्थानमें बैठा होय तोभी गई वस्तुकी प्राप्ति होय. अब चंद्रमाका बलत्व कहते हैं. शुक्लपक्षकी पडिवासे लेके दशमीताई चंद्रमा क मध्यबल होता है और दशमीसे लेके कृष्णपक्षकी पंचमीतक चंद्रमा पूर्णबल होता है फिर पंचमीसे लेके अमावास्यातक चंद्रमाका बल क्षीण होता है. बलवान् चंद्रमा होनेपर में कार्यकी लाभ होती है और क्षीणमें कार्यका नाश होता है और मध्यबलमें देरीसे कार्य होता है अथवा कार्य होय या नहीं होय इन दोनों बातोंकोभी करता है सो कहना चाहिये ॥ ५ ॥

अथ मूकप्रश्नः ।

स्वांशेविलग्नेयदिवात्रिकोणेस्वांशेस्थितः५-



इयतिधातुचिंताम् ॥ परांशकस्थश्चकरो-  
तिजीवंमूलंपरांशोपगतःपरांशम् ॥ ६ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि मेरे मनकी चिंता क्या है कहिये तब जो लग्नमें जैसे ग्रहकी मूर्ति होय तो तत्काल उसी लग्नका नवांशक देखिये वर्तमानका होय तो धातुकी चिंता कहिये और जो सूर्यका अंश होय तो मोतीका प्रश्न कहिये और शुक्र व चंद्रमाका अंश होय तो रूपा कहिये और बुधका अंश होय तो सुवर्ण कहिये और बृहस्पतिका अंश होय तो सुवर्ण रत्नजटित कहिये मंगलका अंश होय तो जस्त कहिये वा ताँबा कहिये शनैश्वरका अंश होय तो लोह कहिये राहुका अंश होय तो पीतर कहिये. केतुका अंश होय तो कांच कहिये अथवा सीसा कहिये. और जो लग्नपति होय तांतें जानिये. और जो लग्नका नवांशक होय तो धातु कहिये और लग्नसे दूसरा नवांशक वा छठीलग्नका नवांश वा दशवें लग्नका नवांशक होय तो जीवचिंता कहिये

और तीसरे वा ७ वे वा ग्यारहवे लग्नका नवांश होय  
तौ मूलकीं चिंता कहिये. लग्नसे चौथे स्थानमें धातु,  
आठ वेमें जीव नवममें मूल ऐसे प्रश्न जानिये ॥ ६ ॥

धातुंमूलंजीवमित्योजराशौ युग्मेविद्यादे-  
तदेवप्रतीपम् ॥ लग्नेयोंशस्तत्क्रमाद्वृण्यए-  
वसंक्षेपोयंविस्तरात्तत्प्रभेदः ॥ ७ ॥

इतिवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायांषड्पंचाशि-  
कायांहोराध्यायःप्रथमः ॥ १ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि मेरे मनकी बात कहौ  
तब विषमराशिसे विचार करै सो विषय कोनकोनसी  
राशि हैं सो कहितेहैं. मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन,  
कुंभ ये विषम राशि हैं इनका नवमांश देख कर कहे. पहिले  
नवमांशसे १ धातु, दूसरेसे २ मूल, तिसरेसे ३ जीव,  
चौथेसे ४ धातु, पांचवेंसे ५ मूल, छठेसे ६ जीव, सातवेंसे ७  
धातु, आठवेंसे ८ मूल, नवमसे ९ जीव और विषम  
लग्नको काम, पहिले धातु और सम लग्नको काम,

( १५ ) ३१-२ पट्टपञ्चाशिका । २ ५५२

जीव, दूजे मूल, तीजे धातु चौथे जीव, पाँचवें मूल छठे धातु, सातमें जीव, आठमें मूल, नवमें धातु केवल इसी प्रकार सब जानिये ॥ ७ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायाषट्पञ्चाशिकायां  
सुबोधिनीटीकायां होराध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

वृषसिंहवृश्चिकघटैर्वृद्धिस्थानं गमागमौन  
स्तः ॥ नमृतं न चापि नष्टं न रोगशांतिर्न चा  
भिभवः ॥ १ ॥

टीका—वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ, ये स्थिर लग्न हैं इन चारों लग्नों में जो वस्तु खोय जाय तो वह नहीं कहीं जाय इन लग्नों में और स्थानों की वृद्धि कहना और जो आने वाला है सो आवेगा नहीं और रोगी मरेगा नहीं, न रोगी का रोग शांति होयगा और शत्रु के विषे पूछे तो उससे पराजय भी नहीं होगा. ये संपूर्ण काम स्थिर हैं. जो मेष, कर्क, तुला, मकर इन चर लग्नों में पूछे

तौ ग्रामके चलवेवारो चले परदेशी वेग आवे और रोगी मरे, नष्ट वस्तु मिले नहीं, जिसको डर होय सो बेरी होय. ये चर लग्नके गुण हैं. अब द्विस्वभावके गुण कहते हैं. मिथुन, कन्या, धन, मीन ये चार लग्न द्विस्वभाव हैं. इन लग्नोंका पहिला आधा चर भाग चरके फलको देता है और दूसरा आधा स्थिरभाग स्थिर करे फलको देता है. जो चरका भाग होय तो शीघ्र फलके देनेवाला है और स्थिरभागमें कार्य देरसे होय और चर स्थिर होय तो मध्यम फल होय अथवा मिश्रित फल होय ॥ १ ॥

तद्विपरीतंतुचरैर्द्विशरीरैर्मिश्रितंफलंभव-  
ति ॥ लग्नैर्द्वोर्वक्तव्यं शुभदृष्ट्या शोभनम-  
तोऽन्यत् ॥ २ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करे तो चंद्रमा लग्नको देखता होय वा लग्नमें स्थित होय तो कार्यसिद्धि

( १४ ) अ० २ पट्टपञ्चाशिका ।

अथवा शुभग्रह देखते होय तौ विवाहादिक शुभ कार्य सिद्धि होय और जो क्रूरग्रह देखते होय तौ शुभ कार्यका नाश होवे कार्य नहीं होय. धरी वस्तु मिलै नहीं, चोरी मिले नहीं, युद्ध जीते नहीं, जुआ जीते नहीं, चर शुभग्रहमें शुभ और क्रूर ग्रहमें कार्यका नाश करै अथवा क्रूर कार्य होय और मिश्रितमें मिश्रित फल कहना ॥ २ ॥

अथ शत्रोर्मार्गान्निवृत्तिज्ञानमाह ।

सुतशत्रुगतैः पापैः शत्रुमार्गान्निवर्त्तते ॥

चतुर्थगैरपि प्राप्तः शत्रुभ्रमोनिवर्त्तते ॥ ३ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता बेरीका प्रश्न करै आवेगा कि नहीं? तो लग्नसे पांचवें और छठे घरमें पापग्रह पडें होय तो बेरी मार्गमें है; आवे है; परंतु घरको लौट जायगा और लग्नसे चौथे स्थानमें पाप ग्रह पडे होय तो बेरी आयके युद्ध करैगा परंतु भाग जायगा. आवते देर नलगे और भागते भी देर न लगेगी. यह फल कहना चाहिये ॥ ३ ॥



अत्रैवान्यत्रयोगांतरमाह ।

झपालिकुंभकर्कटारसातलेयदास्थिताः ॥

रिपोः पराजयस्तदाचतुष्पदैः पलायनम् ॥४॥

टीका—जो प्रश्नकर्त्ता वैरीकी वार्ता पूछे आवेगा कि नहीं तो जो मीन, वृश्चिक, कुंभ, कर्क ये चरलग्न चौथे स्थानमें पड़ीहोंय तो वैरी भागिजाय और हारीजाय. और जो चतुष्पद लग्न सातवें वा चौथे स्थानमें पड़े अथव मेष, वृष, सिंह तो वैरी भागजाय. और जो मकरका पूर्वार्द्ध मेष, सिंह, वृष, और धनुका उत्तरार्द्ध होय तोभी शत्रु भागजाय, यह फल कहना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ यायिनां शुभाशुभज्ञानमाह ।

चरोदये शुभः स्थितः शुभंकरोतियायिनाम् ॥

अशोभनैरशोभनं स्थिरोदयेऽपि वा शुभम् ॥ ५ ॥

टीका—जो चर लग्न मेष, कर्क, तुला, मकर इनमें प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करे और शुभग्रह स्थित होंय वा देखते होंय

( १६ ) अ-२ पट्टपञ्चाशिका ।

५०३

तो वैरीका दल आवेगा सेना साजिके, और गढ़पती हारेगा. और जो स्थिर लग्न होय और क्रूरग्रह स्थित होय या देखता होय तो पहिली सेना जो आई होय सो हार जाय और गढ़पति जीते. पहिली सेनाका क्षय होय. और जो स्थिर लग्न होय शुभग्रह देखता होय तो लडाईमें दोनों बराबर हैं. न वह जीतै, न वह हारै ॥ ५ ॥

अथ शत्रोरागमनार्थज्ञानमाह ।

स्थिरे शशी चरोदयेन चागमोरिपोर्यदा ॥

तदागमं रिपोर्वदेद्विपर्यये विपर्ययम् ॥ ६ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि वैरी कब आवेगा तब वाही समय जो स्थिरराशिपर चंद्रमा बैठा होय और प्रश्नका लग्न चर होय तो वैरी नहीं आवेगा. और स्थिर लग्न होय और चंद्रमा चर राशिका होय तो वैरी अवश्य करिके आवेगा. और जो स्थिर लग्न होय और द्विस्वभाव राशिपर चंद्रमा होय तो वैरी आवतों होय परंतु मार्गहीसे घरको लौटिजाय ऐसा फल कहिये ॥ ६ ॥

शत्रोर्विनिवृत्तिज्ञानमाह ।

स्थिरेतुलग्नमागतेद्विरात्मकेतुचंद्रमाः ॥

निवर्ततेरिपुस्तदासुदूरमागतोपिसन् ॥७॥

टीका—यहां जो पहिलेही कहि आये हैं ताही भांति  
 केर कहतेहैं. जो प्रश्न पूछे तो जो चरलग्नमें चंद्रमा होय  
 और प्रश्नलग्न द्विस्वभाव होय तो वैरी आधे रस्तेसे लौटि  
 जाय घरको, और अपने घर बैठरहै. और जो द्विस्वभाव  
 लग्नपर चंद्रमा होय और प्रश्नलग्नभी द्विस्वभाव होय तौभी  
 आधेमार्गसे लौटिजाय घरको बैठरहै. अथवा द्विस्व-  
 भाव लग्नपर चंद्रमा होय और चरलग्न होय तौ वैरी  
 शीघ्रही आवे और क्रूरग्रहकी दृष्टि होय तो गढको घेर  
 लेय और ग्रामको तोड लेय जीते यह फल कहिये ॥७॥

चरेशशीलग्नगतोद्विदेहः पथोर्ध्वमागत्यनि-  
 वर्ततेरिपुः ॥ विपर्ययेचागमनंद्विधास्या-  
 त्पराजयः स्यादशुभेक्षिते तु ॥ ८ ॥



( १८ ) अ-२ पट्टपञ्चाशिका ।



टीका—जो प्रश्नकर्त्ता पूछे तासमय चरलग्नपर चंद्रम होय और दिस्वभावलग्न होय तो वैरी आधेमार्गसे लौटि जाय घरको. अथवा दिस्वभाव लग्नपर चंद्रमा होय और प्रश्नलग्न चर होय तो वैरी शीघ्रहीसे आवै. और क्रूरग्रहकी दृष्टि होय तो आयके गढ़को तोड़डारे और ग्रामको लूट लेय ॥ ८ ॥

अथ गमागमयोगप्रश्नमाह ।

अर्काकिंज्ञसितानामेकोपिचरोदयेयदा  
भवति ॥ प्रवेदत्तदाशुगमनंवक्रगतैर्नै-  
तिवक्तव्यम् ॥ ९ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करै उस समय सूर्य, शनैश्वर, बुध, शुक्र इन चारों ग्रहोंमेंसे कोईभी चरलग्नमें पड़ेहोय तो वैरी शीघ्रही आवै और जो इनमेंसे कोई वंकी होय तो न आवै यह फल इसका कहना चाहिये ॥ ९ ॥

अथान्ययोगोत्तरमाह ।

मिथगेदयेजीवज्ञानैश्वरेक्षिते गमागमौनैवव

देत्तुपृच्छतः ॥ त्रिपंचपष्टारिपुसंगमायपा-  
पाश्चतुर्थाविनिवर्तनाय ॥ १० ॥

टीका—जो कोई प्रश्न करे वैरीके आगमनकी बात कहिये तब जो स्थिरलग्न होय और बृहस्पति और शनैश्वर देखते होय तो वैरी नहीं आवैगा और जो कोई किसीसे लड़नेको जाय और वैरीसे संग्राम करना चाहे तौ वह कभी नजाय और जो लग्नसे तीसरे पांचवें छठें स्थान पापग्रह पड़े तो वैरी शीघ्र आवै और जो लग्नते चौथे स्थान पापग्रह पड़े तो वैरीकी निवृत्ति होय उसके उस वैरीका नाशहोय ॥ १० ॥

अन्यच्चगमागमयोगमाह ।

नागच्छतिपरचक्रंयदार्कचंद्रौचतुर्थभवन-  
स्थौ ॥ बुधगुरुशुक्राहिवुकेयदातदाशीघ्र-  
मायाति ॥ ११ ॥

टीका—जो पूछे कि वैरी आवैगा कि नहीं तो प्रश्न लग्न होय तार्ते जो चतुर्थ स्थान तामें सूर्य -

( २० ) अ-२ पट्टपञ्चाशिका ।

बैठे होंय तो परचक्र नहीं आवैगा और जो बुध, बृहस्पति, शुक्र बैठे होंय तो वैरी शीघ्रही आवैगा यह लग्नसे चौथे स्थानकी वार्ता है ॥ ११ ॥

मेपधनुःसिंहवृषायद्युदयस्थाभवंतिहिबुके  
वा ॥ शत्रुर्निवर्ततेवैग्रहसहितावाविद्यु-  
क्तावा ॥ १२ ॥

टीका—जो पूछै वैरी आवैगा कि नहीं तौ जो मेप-  
लग्न होय वा वृषलग्न होय वा धनलग्न होय वा सिंह-  
लग्न होय वा लग्नसे चौथे स्थानमें येही लग्न  
पडी होंय तो शत्रु ठहरे नहीं और इनमें ग्रह बैठे  
होंय या नहीं बैठे होंय, तब शत्रु नहीं सन्मुख  
ठहरै ॥ १२ ॥

अथ शत्रोरनागमनार्थयोगमाह ।

स्थिरराशौयद्युदये शनिर्गुरुर्वा स्थितस्त-  
दाशत्रुः ॥ उदयेरविर्गुरुर्वाचरराशौस्यात्त-  
द्वागमनम् ॥ १३ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करै तब जो स्थिरलग्न होय और शनि बृहस्पति तामें बैठे होय तो वैरी अपने घर ठारहै पर चलयौ चाहे है पर चलना नहीं होय. और तो चरराशि होय और इनमें सूर्य, बृहस्पति, शनि कोईभी ग्रह होय तो वैरी ढोल निशान बजाता भया सेना सहित युद्ध करै इसका यह फल है सो कहिये ॥ १३ ॥

अथ प्रयातुर्निवृत्तिसंख्यायोगमाह ।

ग्रहःसर्वोत्तमबलो लग्नाद्यस्मिन्गृहेस्थितः ॥  
मासैस्तुतुल्यसंख्याकैर्निवृत्तियातुरादिशेत्  
॥ १४ ॥ चरांशस्थेग्रहेतस्मिन्कालमेवं  
विनिर्दिशेत् ॥ द्विगुणंस्थिरभागस्थोत्रिगु  
पंद्र्यात्मकांशके ॥ १५ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि वैरी कितने दिनमें आवेगा और कितने दिनमें निवृत्त होयगा तौ प्रश्नलग्नमें जो सबल ग्रह पड़े होय और लग्नसे जितने स्थानमें पड़े होय तो उतनेही महीनेमें जितनेही दिनोंमें और जितने

( २२ ) अ२ पट्टपञ्चाशिका । ६० ६

घडीमें आवैगा. और जो वैरीने आयके गांव, गढ, घा-  
घेराहोय तो प्रश्नकर्ता पूछे कि, परचक्र कितने दिन  
जायगा, तो लग्नते जितने स्थानमें ग्रह पडे होंय तितने  
महीनेमें तितनेही दिनोंमें और तितनीही घडीमें जायगा  
और जो चरलग्न होय तो उससे दुगुने दिनमें जायगा  
यह कहै और द्विस्वभाव लग्न होय तो इससे तिगुने  
दिनमें जायगा ऐसा कहै ॥ १४ ॥ १५ ॥

अत्रैवमतांतरमाह ।

यातुर्विलग्नान्जामित्रभवनाधिपतेर्यदा ॥

करोतिवक्रमावृत्तेःकालंतंष्टुवतेऽपरे ॥ १६ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि प्रवासी कब घर आवैगा  
अथवा परचक्र कब आवैगा तौ जो लग्नका स्वामी सा-  
तवें स्थानमें पडाहोय तो प्रवासी अनायास आयजाय  
अथवा वक्रीहोइके फिर ग्रह मार्गी होय तार्द दिन घर  
आय जाय और इसी प्रकार परचक्रभी आयजाय ऐ-  
सा देखिके फल कहना चाहिये ॥ १६ ॥

अथ शत्रोरागमनादिदिनप्रमाणमाह ।

उदयर्क्षाच्चंद्रक्षैभवतिचयावद्दिनानितावद्भिः ।

आगमनं न स्याच्छत्रोर्यदिमध्येन ग्रहः कश्चित् १७

इति श्रीषट्पञ्चाशिकायां गमागमोद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

टीका—जो पूछे कि आनेवाला बैरी कितने दिनमें आवेगा तो प्रश्नलग्नसे जिस स्थानमें चंद्रमा बैठा होय तितनेही दिनमें आवेगा यह कहिये. पर जो कोई मध्यमें ग्रह न होय तो आवेगा और जो मध्यमें ग्रह उसके साथ बैठे होंय तो न आवेगा यह कहना ॥ १७ ॥

इति श्रीषट्पञ्चाशिकाभाषाटीकायां गमागमा-  
ध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

अथ जयपराजयावाह ।

दशमोदयसप्तमगाः सौम्यानगराधिपस्य  
विजयकराः ॥ आरार्किज्ञगुरुसिताः प्रभं-  
गदाविजयदानवमे ॥ १ ॥

( २४ ) अ० २ पट्टपञ्चाशिका ।

टीका—जो कोई प्रश्नकर्ता यह प्रश्न करे कि यह ग  
वैरीने घेरलियाहे सो दूटेगा या नहीं? तब प्रश्नलग्न  
दशवें या सातवें वा लग्न इन स्थानोंमें जो सौम्य  
ग्रह पडा होय तो गढपती जीतै. और जो नवमें स्था  
नमें मंगल शनैश्वर बैठेहोंय तो नगराधिपतिकी हार औ  
गढमें दृढ संग्राम होय और अग्नि प्रज्वलित होय औ  
बुध, गुरु, शुक्र इनमेंसे कोईभी ग्रह नवमें घरमें बैठा होय  
तो गढपतिकी विजय अर्थात् जीत कहिये ॥ १ ॥

अथनगरयायिनोविजयपरिज्ञानम् ॥

पौरास्तृतीयभवनाद्धर्माद्रायायिनः शुभैःशुभ  
दाः ॥ व्ययदशमायेपापाःपुरस्यनेष्टाःशु  
भायातुः ॥ २ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि वैरीने गढ नगर घेरलियाहे  
सो दूटेगा कि नहीं? तब प्रश्नते तीसरे लग्न विचा  
रिये और तीसरेते नवम लग्न विचारिये. जहां लग्नमें

गौम्य ग्रह बैठे होंय तौ गढपति जीते और जो नवमस्था-  
 में सूर्यलग्न सौम्य ग्रह परै तौ परदल जीते गढ ग्रामका  
 शालिक हारेगा, अथवा जो ग्यारहें वा बारवें स्थान  
 क्रूरग्रह पापग्रह पड़े तो ग्रामाधिपति हारे, ऐसे योगमें  
 जाय सो जीत आवे अथवा सौम्यग्रह वा क्रूरग्रह मिले  
 होंय तो पहिले युद्ध होय तौ हाथी घोडा रथ प्यादे सब  
 मारे जायँ, पीछेसे जीतहोय, आप आपकी हटजायँ,  
 ऐसा फल कहना चाहिये ॥ २ ॥

अथ संधिविरोधज्ञानमाह ।

नृराशिसंस्थाह्युदये शुभाः स्युर्व्ययाय संस्था-  
 श्वयदा भवन्ति ॥ तदा शुसंधिप्रवदेन्नृपाणां  
 पापैर्द्विदेहोपगतैर्विरोधम् ॥ ३ ॥

टीका—जो नरराशि लग्न होय ( नरराशि ) लग्न  
 रहिये मिथुन, तूला, कुम्भ ये तात्काल लग्न होय और उसमें  
 शुभग्रह बैठे होय तो राजाओंकी परस्पर संधि कहिये  
 और जो पापग्रह सूर्य, भौम, शनि, क्षीण चंद्रमा द्विस्व-



( २६ ) अ-२ पट्टपञ्चाशिका ।

भाव राशि विपे स्थित होय तो राजाओंका परस्पर  
विग्रह होयगा. ऐसा विचार करिके कहिना ॥ ३ ॥

केन्द्रोपगताःसौम्याःसौम्यैर्दृष्टानृलग्नाः प्री-  
तिम् ॥ कुर्वन्ति पापदृष्टाः पापास्तेष्वेव वि-  
परीतम् ॥ ४ ॥

टीका—केन्द्र कहिये लग्न, चौथा, सप्तम और दशमस्थान  
इन स्थानोंमें जो शुभग्रह नरराशिगत स्थित होंय और  
शुभग्रह देखते होंय और पापग्रहकी कोईभी दृष्टि नहीं  
होय तो परस्पर प्रीतिसहित संधि होजाय और जो उसी  
स्थानोंमें पापग्रह होय और दृष्टिभी होय तो उलटा  
फल जानना अर्थात् विशेष करिके वैरभाव जानौ ऐसा  
इसका फल कहियै ॥ ४ ॥

अथ सेनागमनदेशस्थागमनमाह ।  
द्वितीयेवातृतीयेवागुरुशुक्रौयदातदा ॥  
आश्वेवागच्छतेसेनाप्रवासीवानसंशयः॥५॥  
इति पट्टपञ्चाशिकायांजयपराजयकथनं नाम  
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

टीका—प्रश्नलग्नसे दूसरे वा तीसरे स्थानविषे शुभ ग्रह गुरु, शुक्र पड़ें तो जो प्रवासी ग्राम गया हो सो शीघ्रही आवे और शत्रुकी सेनाभी शीघ्रही आवे इसमें कुछ संदेह नहीं. और फौजभी लौटिके घर आवे यह फल कहिना चाहिये ॥ ५ ॥

ति षट्पचाशिकासुबोधिनीटीकायां जयपराजयाध्यायस्तृतीयः ३ ॥

अथ शुभाशुभान्याह ।

केंद्रत्रिकोणेषुशुभस्थितेषुपापेषुकेंद्राष्टमव-  
जितेषु ॥ सर्वार्थसिद्धिप्रवदेन्नराणांविपर्यय-  
स्थेषुविपर्ययःस्यात् ॥ १ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछै कि मेरा कार्य होयगा कि नहीं? तब लग्नसे चौथे सातमें दशमें नवमें पांचमें स्थानमें जो शुभग्रह पूर्ण चंद्रमा, बुध, गुरु, शुक्र ये बैठेहोंय नौ शुभ कहना. और केंद्रस्थानमें और रापग्रह युक्त न होय तो वा मनुष्यको सर्व

( २८ ) अ० ६ पट्टपञ्चाशिका ।

कहना. इनके विपरीत ग्रह होय तो अशुभ कहिये. जे लग्न केंद्रमें नवमें पांचमें पापग्रह होय तो अर्थसिद्धि होय और हाथके बीचमें जो धन होय तिसका नाश होय यह फल कहना ॥ १ ॥

अथ लाभालाभमाह ।

त्रिपंचलाभास्तमयेषुसौम्यालाभप्रदानेष्टफ-  
लाश्चपापाः ॥ तुलाथकन्यामिथुनंघटश्चनृ-  
राशयस्तेषुशुभंवदन्ति ॥ २ ॥

टीका—जो कोई प्रश्नकर्त्ता पूछै कि मुझे लाभ हो कि नहीं? तब यह विचार लग्नसे तीसरे पांचमें छठे सा में जो शुभग्रह पड़े होय तो शुभ लाभफलदायक हो. और जो इन स्थानोंमें पापग्रह पड़े होय तो अशुभ फल करे और जो कन्या तुला मिथुन कुंभ ये लग्न होय और सो नरराशि होय तो शुभफल करे हैं यह फल कहना ॥ २

स्थानप्रदादशमसप्तमगाश्चसौम्या मानार्थ-  
दाःस्वसुतलग्नगताभवंति॥ पापाव्ययायस-

हितानशुभप्रदाः स्युर्लग्नेशशीनशुभदोदश-  
मेशुभश्च ॥ ३ ॥

टीका-जो पृच्छक पूछे कि लाभालाभकी बात तो किसी स्थानकी वा गाँवकी वा ठाकुरकी वा मनुष्यकी, तो सौम्यग्रह दूसरे पाँचमें ग्यारहवें इन स्थानोंमें पड़े होय तो संपूर्ण बातकी लाभ कहिये. और ग्रामादिक-कीभी लाभ कहिये. राजाओंमें मान्य होय. और जो लग्नते पाँचमें, दूसरे, ग्यारहमें बारहमें इन स्थानोंमें पापग्रह पड़े होय तो कार्यका नाश होय, विरोध होय, और चंद्रमा अंधेरे पक्षका क्षीण लग्नमें दशमस्थान पड़े तो प्रत्यक्ष नाशको करै है. यह विचार करने योग्य है ॥ ३ ॥

इंदुद्विसप्तदशमायरिपुत्रिसंस्थं पश्येद्गुरुः शु-  
भफलं सकलं कृतं स्यात् ॥ लग्नत्रिधर्मसुत-  
नैधर्माश्च पापाः कार्यार्थनाशमर्थदाः शुभ-  
दाः शुभाश्च ॥ ४ ॥

टीका-जो प्रश्नकर्ता लाभालाभकी पूछै तब

( ३० ) अ० ४ पट्टपञ्चाशिका ।

चंद्रमा दूसरे वा सातमें वा दशमें वा ग्यारहमें छठे तीसरे इन स्थानोंमें बैठा होय और बृहस्पति पूर्ण देखता होय तौ संपूर्ण लाभ कहिये. और स्त्रीकी न कहिये. और जो तीसरे वा नवमें वा पांचमें वा आस्थानमें पापग्रह युक्त होय तो कार्यकी सिद्धि नहीं हो और इन स्थानोंमें शुभग्रह होय तो शुभफल कहि कार्यकी सिद्धि कहिये. यह बात जानौ निश्चय का होगी ॥ ४ ॥

✓ अथ रोगार्तस्य शुभाशुभफलमाह ॥

शुभग्रहाः सौम्यनिरीक्षिताश्च विलग्नसत्ताष्टम  
पंचमस्थाः ॥ त्रिपद्दशाये च निशाकरः  
स्याच्छुभं वदेद्रोगनिपीडितानाम् ॥ ५ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथ्वयशोविरचिता-  
यां पट्टपञ्चाशिकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ६१॥

टीका—अब प्रश्नकर्ता यह पूछे कि रोगार्थ होगा कि नहीं ? तब प्रश्नलग्न वा ५ या ६

एक वा पंचम इन स्थानोंमें जो शुभ ग्रह बैठा होय और  
 [भग्नहकी दृष्टि होय और तीसरे छठे दशमें ग्यारहमें  
 त्रिमा बैठा होय तो रोगसे निवृत्ति कहिये और जो इससे  
 बेपरीत इन्हीं स्थानोंमें पापग्रह बैठे होंय तो रोगी जीवे  
 नहीं, थोड़ेही कालमें रोगी मरे यह फल कहना ॥ ५ ॥  
 ति श्रीषट्पंचाशिकायांसुबोधिनीटीकायांशुभाशुभाध्यायश्चतुर्थः ॥

अथ प्रवासचिंतामाह ।

दूरगतस्यागमनंसुतधनसहजस्थितैर्ग्रहैर्ल-  
 भात् ॥ सौम्यैर्नष्टप्राप्तिलब्धागमनंगुरुसि-  
 ताभ्याम् ॥ १ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करे कि मेरी चीज गई है सो  
 लगेगी कि नहीं ? और जो परदेशी परदेश गया है सो  
 लगेगी कि नहीं ? तब लग्नसे दूसरे, तीसरे स्थान वा पांच-  
 दाश में शुभग्रह बैठे होंय तो परदेशी गया हुआ भी  
 टीका—आवे, और गई हुई वस्तु भी प्राप्त हो

( ३२ ) पट्टपञ्चाशिका ।

और बृहस्पति शुक्र बैठे होंय तो उसी दिन घर आ जाय और नष्टवस्तु उसीदिन मिले निश्चय जानना ॥ १

अन्यदागमनमाह ।

जामित्रेत्वथवापष्टेग्रहःकेंद्रेऽथवाक्पतिः ॥

प्रोपितागमनंविद्यात्रिकोणेज्ञेसितेपिवा ॥ २

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछै आगमनकी बात तो प्रश्न लग्नसे सप्तम स्थानविषे छठे स्थानविषे, कोई ग्रह बैठ होय और केंद्रस्थानमें बृहस्पति बैठा होय तो प्रोपि सातदिनमें वा सत्ताईस दिन ताई घरमें, आजाय. नवमें, पांचमें स्थानमें बुध शुक्र बैठे होंय तो प्रवासी शीघ्र घरमें आवै. और जो इसके विपरीत ( उलट ) हो तो विपरीत कहिये अर्थात् आगमन नहीं होगा ॥ २

अष्टमस्थेनिशानाथेकंटकैःपापवर्जितैः ॥

प्रवासीसुखमायातिसौम्यैर्लाभसमान्वितः ॥ ३

टीका—जो प्रश्नलग्नमें अष्टमस्थानविषे चंद्रमा बैठा हो केंद्रस्थानमें पाप ग्रह नहीं होय तो प्रवासी सुखपूर्व

घरमें आवे और केंद्रमें शुभग्रह पड़े होंय तो प्रवासी  
सीघ्रही आवे और दशवें स्थानमें सूर्य मंगल वा  
शनि होय तो उसका आना नहीं होय और जो दशवें  
स्थानमें बृहस्पति वा चंद्रमा होय तो प्रवासी मार्गमें आव-  
तो जानिये और जो दशमें शनैश्वर होय तो प्रवासीका  
मरण कहिये वा इन लग्नविषे तुला कन्या मिथुन धन  
यह होय तो परदेशी कीसहित घर आवे और राजप्रसाद  
व्यापारसे धन लाभ करिके घर आवे यही सब बात  
निश्चय करिके जानना ॥ ३ ॥

पृष्ठोदये पापनिरीक्षिते वा पापास्तृतीये रिपु  
केंद्रगे वा ॥ सौम्यैरदृष्टा वधबंधदाः स्युर्नष्टा  
विनष्टा मुषिताश्च वाच्याः ॥ ४ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि परदेशी सुखीहै कि  
दुःखीहै ? वह जीताहै कि मरगयाहै ? तब प्रश्नलग्नको देखे  
जो पृष्ठोदय लग्न मेष, कर्क, धन, मकर, मीन इनमेंसे कोई  
लग्न होय और पापग्रह केंद्रस्थानमें होय और शुभ-



( ३४ ) पट्टपञ्चाशिका ।

ग्रहकी दृष्टि न होय तो प्रवासीको ताड़न बन्धन हुआ जानिये और पापग्रहकी पापदृष्टि होय तो प्रवासीका मरण जानिये वा क्लेशयुक्त जानिये वा मार्गमें चोरों करिके नष्ट हुआ जानिये और उसका आगमन नहीं होय ॥ ४ ॥

प्रवासिनश्चागमने कालमाह ।

ग्रहोविलग्राद्यतमेष्टुतेनाहताद्वादशराश-  
यःस्युः॥तावद्दिनान्यागमनस्यविद्यान्निवर्त  
नं वक्रगतैर्ग्रहैस्तु ॥ ५ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि, प्रवासी कितने दिनमें पीछे आवेगा ? तब प्रश्नलग्नसे देखके जिस स्थानमें कोई ग्रह बैठा होय तितनी संख्या द्वादश गुणा करे जो अंक-संख्या आवे उतनेही दिन पीछे प्रवासी घरमें आवे और जो ग्रह वक्री होय तर्जदिन परदेशी घर आवे यह ल जानना ॥ ५ ॥

इति श्रीपट्टपञ्चाशिकायां सुबोधिनीटीकायां प्रवा-  
सिचिंताफलकयननामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ नष्टवस्तुप्राप्तिमाह ।

स्थिरोदयेस्थिरांशेवावर्गोत्तमगतेपिवा ॥

स्थितंतत्रैवतद्रव्यंस्वकीयेनैवचोरितम् ॥ १ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि, मेरी वस्तु गई है मिलेगी कि नहीं, और कहाँ है ? तब वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुंभ इन स्थिर लग्नोंमेंसे कोई होय वा इन्हीं लग्नोंका नवांश होय वा वर्गोत्तम लग्न होय तो वह वस्तु अपनेही पासके आदमीने लीनी है और वह वस्तु उसी स्थानमें स्थित है दूसरे घरमें नहीं गई है वह मिलेगी सही. यह फल विचारकर कहना किसी चोरने नहीं ली है, घरमें है, बाहिरके आदमी ने नहीं ली है ॥ १ ॥

अथ स्थानान्तरगतद्रव्यमाह ।

आदिमध्यावसानेषु द्रेष्काणेषु विलग्नतः ॥

द्वारदेशेतथामध्ये गृहांते च वदेद्धनम् ॥ २ ॥

टीका—लग्नके द्रेष्काण तीन होते हैं—१—से १०

( ३६ ) ३७-११ पट्टपञ्चाशिका ।

अंशोत्तक पहिला, ११-२० अंशोत्तक दूसरा,  
और २१-३० अंशोत्तक तीसरा द्रेष्काण जानना.  
लग्नका पहिला द्रेष्काण प्रश्नकाल में होय तो द्वार  
के विषे चीज कहिये और दूसरे भागमें होय तो घरके  
अंतर्भागमें कहे और जो चर आदिके विषे वस्तु गई  
होय तो घरके पीछे जानिये ऐसा कहना चाहिये ॥ २ ॥

अथ नष्टद्रव्यादेर्लाभालाभमाह ॥

पूर्णःशशीलग्नगतःशुभोवाशीर्षोदयेसौम्य-  
निरीक्षितश्च ॥ नष्टस्यलाभंकुरुतेतदा-  
शुलाभोपयातोबलवान्छुभश्च ॥ ३ ॥

टीका—जो कोई प्रश्नकर्ता पूछे कि, गई हुई वस्तु  
मिलेगी कि नहीं ? तब तात्कालिक लग्नमें जो शीर्षोदय  
लग्न होय और पूर्णचंद्रमा वा कोई शुभग्रह लग्नमें बैठा होय  
अथवा शुभग्रहकी दृष्टि होय तो गई हुई वस्तु शीघ्र ही  
मिलेगी और शुभग्रह बलवान् होकर, ग्यारहवें

ॐ-  
बैठाहोय तो गई हुई द्रव्यकी लाभ होय और जो पृथोदयमें पापग्रह बैठे होंय तो वस्तु पावै सही, यह फल कहना चाहिये ॥ ३ ॥

अथ चौरदिशामाह ।

दिग्वाच्याकेंद्रगतैरसंभवेवावदेद्विलग्नक्षात् ॥  
मध्याच्च्युतैर्विलग्नान्नवांशकैर्योजनावाच्याः ॥ ४ ॥

इति श्रीन० पृथु० विरचितायां षट्पंचाशि-  
कायां नष्टमास्यध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

टीका—जो कोई पूछै कि, मेरी वस्तु कौनसी दिशामें गई तब प्रश्नलग्नसे विचार करै. जो कोई ग्रह केंद्रमें स्थित होय उसकी दिशा कहनी. जो सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, शशि बुध, और जीव ये आठों दिशाओंके स्वामी हैं जो सूर्य केंद्रमें होय तो पूर्वदिशामें कहिये और जो शुक्र बैठाहोय तो अग्रिकोणमें कहिये. और जो मंगल केंद्रमें होय तो दक्षिणदिशामें कहिये और राहु

होय तो नैऋत्यदिशामें कहिये शनि होय तो पश्चिममें कहिये. चंद्रमासे वायव्य कहिये. बुध होय तो उत्तर और बृहस्पतिसे ईशान कहिये. और जो दो ग्रह केंद्रमें होय तो जिसका अधिक बल होय उसकी दिशा कहिनी और जो केंद्रमें कोईभी ग्रह न होय तो मशालग्रसे दिशा कहनी. मेष सिंह धन लग्नसे पूर्व, वृष कन्या मकरसे दक्षिण, मिथुन तुला कुम्भसे पश्चिम, कर्क वृश्चिक मीनसे उत्तर दिशा कहनी चाहिये. फिर लग्नका नवमांश देखके कोस योजनका प्रमाण कहना तहाँ प्रथम नवमांश के पंचमांशतक गिनना और पंचमसे नवम तांई गिनना जो अंश गणनामें आवे अर्थात् जितने अंश गतहोय तितने योजन वह वस्तु गई जानिये ऐसा फल जानना ॥ ४ ॥

इति श्रीपट्टपञ्चाशिकासुबोधिनीटीकायां

नष्टवस्तुमाप्तिः पष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

## अथ मिश्रकाध्यायः ।

तत्रगुर्विण्याः पुत्रदुहित्रोर्जन्म वरस्य च पुनः  
कन्यालाभालाभफलमाह ।

विषमस्थितेर्कपुत्रेसुतस्यजन्मान्यथांगना-  
याश्च ॥ लभ्यावरस्यनारीसमस्थितेतोन्य  
थावामम् ॥ १ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न पूछे कि मेरी स्त्रीके गर्भ हैउसे  
या भैंस या गौ या घोड़ीके क्या होगा? कहौ. तहां प्रश्न-  
लग्नसे विचारे, जो शनैश्वर विषमस्थानमें अर्थात् तीसरे  
पांचमें सातमें नौमें लग्नमें या ग्यारहवेंस्थानमें बैठाहोय तो  
पुत्रकाजन्म कहिये और द्वितीय आदिछः स्थानोंमें  
अर्थात् दूसरे चौथे आठवें दसवें बारहवें इन स्थानोंमें  
जो शनैश्वर बैठाहोय तो कन्याका जन्म कहिये और  
जो प्रश्नकर्ता स्त्रीकी पूछे तो स्त्रीकी प्राप्ति इन्हीं स्थानोंसे  
कहिये जो प्रश्नलग्नमें शनैश्वर समस्थानोंमें होय

( ४० ) - पट्टपञ्चाशिका ।

। उसे स्त्रीकी प्राप्ति होय और जो विपमस्थानमें बैठा  
।य तो स्त्रीकी प्राप्ति नहीं यह फल जानना  
चाहिये ॥ १ ॥

अथ विवाहज्ञानमाह ।

गुरुरविसौम्यैर्दृष्टस्त्रिसुतमदायारिगःशशी  
लग्नात् ॥ भवतिचविवाहकर्तात्रिकोणकेंद्रे  
पुवासौम्याः ॥ २ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता विवाहका प्रश्न करै कि विवाह  
होयगा कि नहीं? तहां प्रश्नसे तीसरे पांचमें छठे सातमें  
ग्यारहवें स्थानमें चंद्रमा बैठाहोय और सूर्य, बुध, गुरु  
इनकी दृष्टि होय तो विवाह अवश्य करिके होय और  
जो पांचमें, नवमें और केंद्रस्थानमें शुभ ग्रह बैठे होंय  
तोभी किसी प्रकारसे विवाह अवश्य होयगा और चंद्र-  
मा यथोक्तस्थानमें न होय तो विवाह नहीं होगा यह  
फल कहिना चाहिये ॥ २ ॥

अथ वृष्टिज्ञानमाह ।

चंद्रार्कयोःसप्तमगौसितार्कसुखेष्टमेवापित  
थाविलग्नात् । द्वितीयदुश्चिक्वगतौतथाचव  
र्षासुवृष्टिप्रवदेन्नराणाम् ॥ ३ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि वर्षा होयगी कि नहीं तब  
प्रश्नलग्नमें सूर्य चंद्रमा स्थित होय और चंद्रमासे सातवें  
स्थानमें शुक्र शनिभी यथासंभव स्थित होय तो वर्षा होय  
वा सूर्यसे दूसरे, चौथे, अष्टमस्थानमें शुक्र शनैश्वर स्थित  
होय तौभी वर्षा होय और जो चंद्रमाके स्थानमें  
शुभग्रह बैठहोय तौभी वर्षा कहिये. यह फल वर्षाक  
कहना योग्य है ॥ ३ ॥

सौम्याजलराशिस्थास्तृतीयधनकेंद्रगाःसिः  
तेपक्षे ॥ चंद्रेवाप्युदयगते जलराशिस्थे  
वदेद्वर्षम् ॥ ४ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि, मेघ वर्षगा या नहीं तब प्रश्न



लग्नविषे शुभ ग्रह जलराशि—कर्क, मकर, कुम्भ, मीन, वृश्चिकविषे स्थितहोंय और सौम्यग्रह केंद्रस्थान विषे स्थितहोंय अथवा दूसरे तीसरे होंय तो शीघ्रही जल वर्षे वा शुक्लपक्षमें चंद्रमा जलराशिमें स्थित होकर लग्नमें बैठाहोय वा सप्तमस्थानमें होय तो निश्चय करिकै वर्षा होय. यह फल जानिये ॥ ४ ॥

अथ गर्भिण्यागर्भे किं भविष्यति तत्राह ।

पुंवर्गे लग्नगते पुंग्रहदृष्टे बलान्विते पुरुषः ॥

युग्मे स्त्रीग्रहदृष्टे स्त्रीबुधयुक्ते तु गर्भयुता ॥ ५ ॥

टीका—प्रश्नकर्ता गर्भिणी गौ है स्त्री पूछे कि, उसके कुछ होगा कि नहीं और क्या होगा. तब लग्नविषे जो पुरुष लग्न मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ, ये होंय तो और पुरुष ग्रह सूर्य, मंगल, गुरुकी दृष्ट होय और बलवान् होय तो पुरुष जानिये और जो स्त्रीलग्न अर्थात् वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन ये समलग्न

होंय और स्त्रीग्रह चंद्रमा शुक्र देखता होय तो स्त्री वा कन्याका जन्म जानिये और जो लग्नमें बुधकी दृष्टि होय तो सगर्भा कहिये और पंचम स्थानमें क्रूर ग्रहकी दृष्टि होय तो गर्भ नहीं होय ऐसा फल कहना चाहिये ॥ ५ ॥

प्रष्टुःस्त्रीपुंविषयेप्रश्नमाह ।

कुमारिकांवालशशी बुधश्चवृद्धांशनिःसूर्य  
गुरुप्रसूतांम् ॥ स्त्रीं कर्कशांभौमसितौ-  
विधत्तएवंवयःस्यात्पुरुषेषुचैवम् ॥ ६ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि, स्त्री कैसीहै तहाँ लग्नमें चंद्रमाको देखना जो चंद्रमा शुक्रपक्षकी द्वितीयासे लेके दशमी पर्यंतका होय तो कुमारी कन्या होय और दशमीसे लेके कृष्णपक्षकी पंचमी पर्यंत होय तो यौवनवती कहिये और पंचमीसे अमावास्यातार्दिका होय तो वृद्धस्त्री कहिये और लग्न विषे बुध होय तो अथवा दूबता होय तोभी यौवनसहित कन्या कहिये

और याही क्रमसे वृद्धस्त्री और वही क्रमसे विचारिये जो लग्नविषे शनैश्वर स्थित होय अथवा बलवान् दृष्टि होय तो स्त्री वृद्ध जानिये सूर्य और बृहस्पति युंक्त दृष्टि होय तो स्त्रीको प्रसूति सहित जानिये और मंगल शुक्र होंय तो कर्कशा और तरुण स्त्री कहिये इसी प्रकार पुरुषोंका भी क्रम जानना चाहिये ॥ ६ ॥

मनसिकाचिंतावर्ततेएतदाह ।

आत्मसमं लग्नगतैर्भ्रातासहजस्थितैःसुतः  
सुतगैः ॥ माता वा भगिनी वा चतुर्थगैःशत्रु-  
गैःशत्रुः ॥ ७ ॥ भार्यासप्तमसंस्थैर्नवमेध-  
र्माश्रितोगुरुर्दशमे ॥ स्वांशपतिर्भिन्नशत्रु-  
पुत्रतैवप्राच्यंबल्युतेषु ॥ ८ ॥

टीका—जो प्रश्नलग्नमें सूर्यादिक ग्रह बलसहित लग्न-  
विषे स्थित हों तो अपने समान कोई कोई पुरुष  
चित्तमें जानिये और जो तृतीय-र ग्रह बलिष्ठ

होय तो भातृग्रह कहिये और चौथे स्थान विषे ग्रह बली होय तो माताभगिनी दासीकी चिंता कहिये और जो पंचम स्थान विषे ग्रह बलिष्ठ हो तो पुत्र कन्याकी चिंता कहिये और जो ग्रह षष्ठस्थान विषे बली होयके बैठे होय तो शत्रुकी चिंता कहिये और जो सप्तमस्थानमें ग्रह बली होय तो भार्याकी चिंता कहिये और नवम स्थान विषे ग्रह बली होय तो धर्मकी चिंता कहिये और जो दशम स्थान विषे ग्रह बली होय तो गुरु पिताकी चिंता जानिये जो लग्नका नवमांश कर्का अधिपति मूर्तिस्थान विषे स्थित होय तो अपने शरीरकी चिंता कहिये यह मित्रभाव देखकर बलाबल कहना जो शुभग्रहकी दृष्टियुक्ति होय तो शुभफल कहना और शत्रु ग्रहकी दृष्टियुक्ति होय तो अशुभ फल कहना ॥ ७ ॥ ८ ॥

अथप्रवासचिंताज्ञानमाह ।

चरलग्नेचरभागेमध्याह्नप्रेप्रवासचिंतास्या

त् ॥ अष्टः सप्तमभवनात्पुनर्निवृत्तोयदिन  
वक्त्री ॥ ९ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे तब चर अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर, इनमेंसे कोई लग्न होय अथवा इनका नवमांश होय तो मध्यम स्थानमें कहो और पंच-मांशसे व्युत्ति कहो और छठे आदि नवमां-श होय तो यहाँ प्रश्नकर्ताको प्रवासचिंता कहिये और जो सप्तमस्थानका नवमांश होय तो कोई ग्रहकी दृष्टि होय तो प्रवासीकी ( अनेक प्रकारसे आगमनकी ) चिंताकरता जानना परंतु वह ग्रह वक्त्री न होय और जो वह वक्त्री होय तो स्थितहुवाभी प्रदेश अवश्य जायगा यह फल कहना ॥ ९ ॥

अथ प्रष्टाचेत्पृच्छतिकीदृश्यास्त्रियासहमे  
संयोगआसीदित्येतत्परिज्ञानमाह ।

अस्तेरविसितवक्त्रैः परजायां स्वांगुरौ बुधेवे-  
श्याम् ॥ चंद्रे च वयःशशिवत्प्रवदेत्सौरै-  
न्यजातीनाम् ॥ १० ॥

टाका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करै कि कैसे स्त्रीके साथ मेरा सग हुआथा, तो ऐसा कहे; लग्नसे मंगल, शुक्र, सप्तमस्थान विषे स्थितहोयँ तो परस्त्रीसंयोग कहना और जो बृहस्पति सप्तमस्थानमें होय तो अपनी स्त्रीका संयोग कहना और बुध सप्तम होय तो वेश्याका संगम जानना । वैसेही चंद्रमासे स्त्रीकी उमर कहना नवमस्थानमें चंद्रमा होय तो बालक कहना और जो तरुण होय तो तरुण कहना और जो वृद्ध होय तो वृद्ध कहना ये सब बातें चंद्रमाका बल देखके जैसी चंद्रमाकी अवस्था होय तैसी अवस्था पीछे कहनी चाहिये. यही फल कहने योग्यहै और शनैश्चरसे निरुष्ट जाति कहना ॥ १० ॥

अथ रोगार्तस्यपरदेशोस्थितस्यमृत्यु-  
योगमाह ।

मंदः पापसमेतो लग्नान्नवमेशु भैरयुतदृष्टः ॥  
रोगार्तः परदेशोचाष्टमगोमृत्युकर एव ॥ ११ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि, मेरा मनुष्य परदेश गया है वह बीमार है सो जीवै है या नहीं ? तब प्रश्नसमयमें जो शनैश्वर और पाप ग्रह नवमस्थान विपे स्थित होय और शुभग्रहकी दृष्टियुक्त न होय तो परदेशमें वह मनुष्य रोगसे बहुत पीडित कहना और जो शनैश्वर पापग्रह सहित वा शुभग्रहसहित अष्टमस्थानमें स्थित होय तो रोगीकी मृत्यु कहना वह मनुष्य कदाचित् नहीं जीवेगा ऐसा फल कहना ॥ ११ ॥

अथ प्रश्नेपितान्यदेशस्थः कथं तिष्ठति तदाह ।

सौम्ययुतोर्कः सौम्यैः संहृष्टश्चाष्टमर्क्षसं-  
स्थश्च ॥ तस्माद्देशादन्यंगतः स वाच्यः पि-  
ता तस्य ॥ १२ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि, मेरा पिता परदेश गया है सो वह उसी देशमें है या और किसी देशमें गया है ? तब जो प्रश्नलग्नमें या अष्टमस्थानमें सूर्य सौम्य ग्रह करके

युक्त होय या शुभग्रहकी दृष्टि होय तो या जष्टमलग्न होय तो उस देशसे और देशमें गया जानिये और सूर्य इसके विपरीत होय तो उसी देशमें कहना ऐसा फल कहना चाहिये ॥ १२ ॥

अथ द्रव्यतस्करस्वरूपकालदिग्देशानां ज्ञानमाह ।

अंशकाज्ज्ञायतेद्रव्यं द्रेष्काणैस्तस्कराः स्मृ-  
ताः ॥ राशिभ्यः कालदिग्देशावयोज्ञाति-  
श्वलग्नपात् ॥ १३ ॥

इति श्रीवराहमिहिराचार्यपुत्रपृथुयशोविर-  
चितापद्रपञ्चाशिकासमाप्ता ।

टीका—प्रश्नसमयमें जो लग्न होय तिसके नममांश-  
कसे तो द्रव्य कहनी और धातु मूल जीव जो पीछे कहि  
आयेहं तिससे राशि की तुल्य वर्ण कहना जैसे सूक्ष्म जात  
कर्म कहाहं कि, मेपराशिका लालवर्ण, वृषका श्वेत,



मिथुनका हरित, कर्कका पाटल, सिंहका पांडुर, कन्याका चित्र विचित्र, तुलाका श्याम, वृश्चिकका भूरा, धनका पीला, मकरका कर्पूरी, कुंभका बभ्रुक, मीनका मलिनवर्ण जानिये और लग्नके नवमांशकसे दीर्घ ह्रस्व मध्यम यह भाव जानना चाहिये. तहां कुम्भ, मीन, मेष, वृष, ह्रस्व नाम छोटा जानिये और मिथुन, कर्क, धन, मकर इनके नवमांशसे मध्यम भाव जानिये, याने न छोटा न बड़ा, सम जानिये. और सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिकके नवमांशसे दीर्घ भाव कहिये ऊँचा और जो अंशाधिपति बलसहित होय तो पुष्टदीर्घ कहिये अस्तगत होय तो क्षीण छोटी वस्तु जानिये और लग्न क द्रेष्काण दिपे होय तो चौर जानिये जैसी द्रेष्काण की आकृति होय तैसी चौरकी भी जानिये तहाँ विशेष इतना है कि, मेषके प्रथम द्रेष्काणदिपे परशुहस्त पुरुष कृष्णवर्ण लालनेत्र विकरालरूप कहिये. द्वितीय द्रेष्काणसे लालवर्ण स्थूलोदर दीर्घमुख टेढ़े पाँव क-

हिये मेषके तृतीयद्रेष्काणमें क्रूर पुरुष कापिलवर्ण र-  
 क्तांबर दंडधारी कहिये. वृषके प्रथम द्रेष्काणमें स्त्री तनु  
 दीन कुंचितकेश स्थूलोदरी जलावस्त्र पहिरे, द्वितीयमें  
 पुरुष काला सहि लांगल शकटमणि कुशल, तृतीयमें बडे  
 पाँच पुरुष कहिये. मिथुनके प्रथमके द्रेष्काणमें स्त्री स-  
 हितही निपटही रजस्वला गहिने सहित होय, दूसरे पु-  
 रुष वनमें स्थित कवचधारी धनुषपाणी जानिये, तीसरे  
 पुरुष रत्नभूषित पंडित धनुष हाथमें कहिये, कर्कके प्र-  
 थममें पुरुष हाथी समान शरीर शूकरमुख, दूसरे यौवन  
 वर्ती युवा पुरुष वनमें रहियेवारो सुवर्णभूषण सहित  
 पुरुष जानिये. सिंहके प्रथम द्रेष्काणमें पत्नीसंस्कार  
 गृहजंघुक वराह कुकुर कहिये. द्वितीयमें पुरुष धनु कु-  
 टिल केश दंड हस्तमें जानिये. कन्या स्त्री प्रथममें मली-  
 नवस्त्र द्वितीये पुरुष लेखनी हस्तमें अतिरोग धनुषपा-  
 णी तृतीय उन्नत गंड ऊंचे कंधे रेशमीवस्त्र पाटांबर

तुला प्रथममें तुला हस्तमें पुरुष वीथ्यापण भक्त उन्नत  
हस्त भांड चिंतनकरे क्षुधार्त आतुरवेग होय कलश-  
बडा मुख होय गृध्रमुख होय तृतीये पुरुष दग्धमुखादि  
दृष्टि धनुषपाणि. वृश्चिक प्रथम स्त्री लग्न स्थान-  
च्युत सर्प वृश्चिक पाद मनोहरणी द्वितीये स्त्री भर्तृकृते  
सुजंगावर्त्तशरीर मुखकी वांछित तृतीये पुरुष चिप-  
दामुख होय अथ धनु प्रथम धनुषपाणी द्वितीये गौरवर्ण  
पुरुष तृतीये दंडहाथ जानिये. मकर प्रथमे रोम-  
स्थूल दाँत बडे द्वितीये स्त्री शमामावर्ण गहिने सहित  
तृतीये पुरुष श्याम वर्णजानिये. कुम्भ प्रथमे पुरुष  
गृध्र तुल्य मुख कमलसहित द्वितीये पुरुष गौरवर्ण  
तृतीये पुरुष श्यामवर्ण कहिये. मीन प्रथमे पुरुष  
नौका स्थित द्वितीये गौरवर्ण पुरुष तृतीये द्रेष्काणे  
पुरुष लग्ने भीतिसहित समर्याद भ्रष्टांग जानिये. अथ  
‘ कालदिग्देशा ’ इति । मेष, वृष, मिथुन, कर्क,

मकर, धन लग्न होयँ तो रात्रि समय जानिये. वृष, कन्या मकर विषे दक्षिणदिशा कहिये. मिथुन, तुला, कुम्भसे पश्चिम; कर्क, वृश्चिक, मीनसे उत्तर और प्रश्नकालमें मेषलग्न होय तो मेषका प्रचार भूमिका कहिये. वृषमें गोकुलादिस्थान, मिथुनमें गीत नृत्यादि स्थानमें अथवा एकांतके स्थानमें कहिये, कर्कमें नालासमीपमें, सिंहलग्नमें वनकी भूमिमें, कन्या विषे नौका वा क्रीडास्थानमें, तुलाविषे ग्रामभूमिमें, मकर विषे अपनेही स्थानमें, वृश्चिकमें ग्राममें वनस्थानमें, धनुविषे कुंभमें नदीके निकटमें शिल्पगृहमे भांडके समीप स्थान कहिये तहां प्रश्नकालके लग्नसे चोरकी अवस्थाका प्रमाण कहना और जो चंद्रमा लग्नका स्वामी होय तो बालक कहिये और मंगल होय तो ब्रह्मचारी वारहवर्षका जानिये और शुक्र होय तो यौवनसहित पौडशवर्षकी अवस्था कहिये और बृहस्पति लग्नाधिपति होय

तो तीसवर्षका वय कहिये सूर्य होय तो वृद्ध पचास-  
 वर्षके ऊपर जानिये और सत्तरवर्षसे अधिककामी  
 जानिये ( अथ स्वामिनां लग्नज्ञानमाह ) तहां शुक्र  
 बृहस्पति लग्नाधिपति होय तो ब्राह्मण जानिये और  
 सूर्य मंगल होय तो क्षत्रिय जानिये और चंद्रमा होय  
 तो वैश्य जानिये और बुध होय तो शूद्र जानिये  
 और शनैश्वर होय तो वर्णसंकर जाति जानिये. हीन  
 वर्णभी जानिये यह सब बातें अपनी बुद्धिके बलसे  
 विचार करना योग्य है ॥ १३ ॥

इति श्रीवराहमिहिराचार्यात्मजवृथुयशोविरचितायां पट्टपञ्चा-  
 शिकायां रामकृष्णशर्मकृतायां सुबोधिनीटीकायां,  
 मिश्रकाव्याय-सप्तमःसमाप्तः ॥ ७ ॥

विश्वं येन तनं चराचरमिदं सर्वार्थदं सर्वगं ।  
 यं ध्यायन्ति सदाजना दृदिमृदा स्वाभाटसिद्धये विभुम्  
 वन्दे तं करुणानिधिं स्वगिरमा श्रीरामकृष्णं प्रभुम् ।

प्रारंभे निजनिर्मितिप्रसृतये श्रीरामकृष्णो द्विजः ॥ १ ॥

चैनाचन्द्रोर्गलपूरे न्यवसद्वाह्मणोत्तमः ॥

तस्यात्मजो रामलालो रामकृष्णस्तदात्मजः ॥ २ ॥

पट्पञ्चाशिकाग्रंथस्य टीका भावार्थबोधिनी ॥

अबोधानां सुबोधाय नृगिरा रचिता मया ॥ ३ ॥

॥ इति पट्पञ्चाशिका संपूर्णा ॥



खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-बंबई.

# विक्रय्यपुस्तकोंकी-सूची ।



नाम.	की० रु० आ०
लीलावती सान्वय भाषाटीका अत्युत्तम ...	१-८
बृहज्जातकसटीक भट्टोत्पलीटीकासमेतजिल्द	१-१२
बृहज्जातकमहीधरकृतभाषाटीका अत्युत्तम	१-८
वर्षदीपकपत्रीमार्ग ( वर्षजन्मपत्र बनानेका )	०-४
मुहूर्तचिंतामणि प्रमिताक्षरा रफू. १ ग्लेज	१-८
मुहूर्तचिंतामणि पीयूषधारा टीका ...	२-८
तान्त्रिकनीलकण्ठी तंत्रत्रयात्मक महीधरकृत भा०टीका अत्युत्तम टैपकी छपी ...	१-८
ज्योतिषसार भाषाटीकासहित ...	१-०
संपूर्ण पुस्तकोंका बड़ा मृचीपत्र)॥ का दिकट भेजकर मँगालें	

पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीविद्मन्मन्त्रेश्वर” छापाखाना, खेतवाडी-बंबई

श्रीः

# अथ षट्पञ्चाशिका ।

संस्कृतटीकासहिता ।



श्लोक—केशाजार्कनिशाकरानक्षितिजविज्जीवास्फु-  
जित्सूर्यजान्विघ्नेशंस्वगुरुंप्रणम्यशिरसादेवींचवागीश्वरी  
म् ॥ प्रभञ्जानवतोवराहमिहिरापत्यस्यमद्वस्तुनोलोका-  
नांहितकाम्ययाद्विजवरष्टीकांकरोत्युत्पलः ॥ १ ॥

प्रणिपत्यरविमूर्ध्नावराहमिहिरात्मजेनपृथु-  
यशसा ॥ प्रश्रेकृतार्थगहनापरार्थमुद्दिश्य-  
सद्यशसा ॥ १ ॥

टीका—कानीहशास्त्रेसंबंधाभिधेयप्रयोजनानिभवंती-  
त्युच्यते आब्रह्मादिविनिश्चितमिदवेदांगमितिसंबंधः ल-  
ग्रहोरात्रेष्काणनवांशसप्तांशकादिनाग्रहसंस्थानदर्शनेनच-  
जयपराजयलाभालाभहतनष्टादिपरिज्ञानमभिधेयम्



न्यत्रशुभाशुभकथनादिहलोकपरलोकसिद्धिरितिप्रयोज-  
 नम् ॥ किमेभिरुक्तैरित्युच्यते सर्वस्यैवहिशास्त्रस्यकर्म  
 णोवापिकस्यचित् ॥ यावत्प्रयोजनंनोक्तंतावत्केननगृ-  
 ह्यते ॥ कस्यास्मिन्शास्त्रेऽधिकारः उच्यते द्विजस्यैव  
 यतस्तेनपङ्गोवेदोऽध्येतव्योज्ञातव्यश्च कान्यङ्गानी-  
 त्युच्यते शिक्षाकल्पोव्याकरणंनिरुक्तंज्योतिषांगतिः॥  
 छंदसांलक्षणंचैवपङ्गोवेद उच्यते इति सतामयमाचारो-  
 यच्छास्त्रस्यारंभेऽप्यभिमतदेवतानमस्कारंकुर्वंतितदयमपि  
 आवंतिकाचार्योद्विजोवराहमिहिरात्मजःपृथुयशाः सं-  
 क्षिप्तांप्रश्नविद्यांस्वसूत्रैः कर्तुकामः आदावेवभगवतः  
 श्रीसूर्यस्यनमस्कारंस्वनामास्यापनंचप्राह प्रणिपत्येति  
 वराहमिहिराख्यस्याचार्यस्यआत्मजेनपुत्रेणपृथुयशसा  
 पृथुयशाइत्याभिधानं यस्य तेन रविंसूर्यं मूर्ध्नाशिरसा प्र-  
 णिपत्यनमस्कृत्यप्रश्नेप्रश्नविषये इयंप्रश्नविद्यारुतारचिता  
 कीदृशीअर्थगहना अर्थोभिधेयंगहनोगुह्यो यस्याः  
 साअर्थगहना किमर्थम् परार्थमुद्दिश्य परेषांलोकानामर्थः  
 परार्थमुद्दिश्याभिधाय कीदृशेनपृथुयशसा

सद्यशसा सत्तशोभनयशःकीर्तिर्यस्य तथाभूतेनविद्याशौ-  
र्थादिगुणयुक्तेनेत्यर्थः ॥ १ ॥

च्युतिर्विलग्नाद्धिबुकाच्चवृद्धिर्मध्यात्प्रवासो-  
ऽस्तमयान्निवृत्तिः ॥ वाच्यंग्रहैःप्रश्नविलग्न-  
कालाद्गृहंप्रविष्टोहिबुकेप्रवासो ॥ २ ॥

टीका—अधुनालग्नचतुर्थसप्तमदशमानांचतुर्णांस्था-  
नानांविचारप्रविभागमाह च्युतिर्विलग्नैति च्युतिःच्यवनं  
स्थानपरिभ्रंशः विलग्नान्नात्कालिकात्पृच्छालग्नान्च्युति  
ज्ञेया पृच्छांपृच्छति अमुकस्थानान्मेच्युतिर्भविष्यतिवा  
नेत्येतत् विलग्नान्ज्ञेयम् एवंहिबुकाच्चतुर्थस्थानात्गृहसु  
हृत्सुखानांवृद्धिज्ञेया मध्यंदशमस्थानंतस्मात्प्रवासोज्ञेयः  
प्रवसनंप्रवासःअन्यदेशगमनम् अस्तमयात्सप्तमस्थाना-  
न्निवृत्तिःप्रवासान्निवर्तनम् कथमेवमुच्यते चरस्थिरद्वि-  
स्वभावात्मकत्वेन यतउक्तम् प्रश्नविलग्नकालात् प्रश्नःपृ-  
च्छा प्रश्नेविलग्नंप्रश्नविलग्नंतस्यकालःसमयस्तस्मात् तेन  
चरराशौलग्नगतेस्वामिनायुतेदृष्टेवाशुभप्रहाणामन्यतमे-

नवायुतेदृष्टे परिशिष्टग्रहसंयोगसंदर्शनरहितेच्युतिर्भवति  
 अन्यथानभवत्येव यतउक्तम् वाच्यंग्रहैःकारणभूतैः  
 वाच्यं वक्तव्यं सर्वमेवैतत् एवंस्थिरराशौपापग्रहदर्शनयोगर  
 हितेपिनभवत्येव यतोवक्ष्यति वृषसिंहवृश्चिकघटैर्वि-  
 द्धिस्थानंगमागमौनस्तइति तथाद्विस्वभावेभवतिनवा  
 स्वामिशुभग्रहदर्शनाधिक्यात्पापानामल्पत्वाच्चभवति अ-  
 न्यथानभवत्येव एवंचतुर्थस्थानस्यसामान्यतयैवशुभग्र-  
 हस्वामिदर्शनयोगाद्गृहादीनांवृद्धिः अन्यथाऽपचयः अ-  
 थोप्रवासः दशमस्थानस्यचरराश्यात्वकत्वात् पाप-  
 ग्रहदर्शनात्प्रवासः अन्यथास्वामिशुभग्रहदर्शनयोगा-  
 चनप्रवासः सप्तमस्थानस्यचरराश्यात्मकत्वात् पापग्र-  
 हदर्शनान्नप्रवासान्निवृत्तिः अन्यथास्वामिसौम्यगृहदर्श-  
 नयोगाच्चनिवृत्तिः गृहंप्रविष्टोहिबुकेप्रवासी हिबुकेचतुर्थ-  
 स्थानेप्रवासीविदेशस्थोनरोगृहंवैश्वप्रविष्टोनवेतिवक्तव्यं  
 चतुर्थस्थानेस्वस्वामिदृष्टेयुक्तेवागृहंप्रविष्टोऽन्यथानप्रवि-  
 द्धइति हिबुकेग्रहंप्रविष्टेगृहंप्रविष्टंप्रवासिनांविद्धि हिबुका-

स्तमयांतरगेग्रहेचपथिवर्ततेपुरुषइति तस्यप्रविष्टस्य  
यावंतिदिनानिव्यतीतानितावंत्येवगृहंप्रविष्टस्यप्रवासिनो  
गतानि अथवायावद्भिर्दिनैःसग्रहश्चतुर्थस्थानेयास्यति  
तावद्भिरेवप्रवासीगृहंप्रविश्यति एतदूरगतस्यगमनंचेत  
यस्मिन्वक्ष्यमाणेयातेसतिवक्तव्यम् नान्यथेति एतच्च  
पुरस्ताद्विस्तरेणाभिधीयतइति ॥ २ ॥

योयोभावःस्वामिदृष्टोद्युतोवासौम्यैर्वास्या-  
त्तस्यतस्यास्तिवृद्धिः ॥ पापैरेवंतस्यभा-  
वस्यहानिर्निर्देष्टव्यापृच्छतांजन्मतोवा ॥३

टीका—अधुनातन्वादीनांद्वादशभावानांशुभाशुभज्ञान-  
माह योयोभावइति तनुधनसहजसुहृत्सुतारिपुजायामृत्यु-  
धर्मकर्मायव्ययाइतिद्वादशभावाउक्ताः कुजशुक्रज्ञेद्व-  
र्कज्ञशुक्रकुजजीवसौरियमगुरवः इतिराश्याधिपाउक्ताः  
तथा क्षीणेद्वर्कयमाराःपापास्तैःसंयुतःसौम्यइतिग्रहाणां  
पापसौम्यत्वमुक्तम् तथा दशमतृतीयेनवपंचमे चतुर्था-  
ष्टमेकलत्रंचपश्यंतिपादवृद्ध्याफलानिचैवंप्रयच्छंति

( ८ )

पट्टपञ्चाशिका ।

मेतद्वृष्टिफलमुक्तं तेन पृच्छासमयेयः कश्चिद्भावस्तन्वा-  
दिकः स्वामिनात्मीयनाथेन दृष्टोऽवलोकितस्तस्य भावस्य  
वृद्धिरुपचयोस्ति विद्यते अथवा तेनैव स्वामिना युतः  
संयुक्तस्तस्यापि वृद्धिरस्ति सौम्यैर्वा स्यात् सौम्यग्रहाणां  
बुधगुरुशुक्रपूर्णचंद्राणामन्यतमेन वा युतो दृष्टो वा भावः  
स्याद्भवेत् तस्यापि वृद्धिरस्ति वर्द्धनं वक्तव्यम् पापैरेवमिति  
एवमनेन प्रकारेण पापैः पापग्रहैरपि रविकूरयुतबुधभौम-  
सौरिक्षीणचंद्राणामन्यतमेन यो यो भावो युक्तो दृष्टो वा तस्य  
भावस्य हानिरुपचयो निर्दष्टव्या वक्तव्या कस्मादिति  
ते देवाह पृच्छतां जन्मतो वेति पृच्छतां पृच्छासमयेन रा-  
णां जन्मतो वा जायमानानां तथा चोक्तं जातके  
पुष्णंति शुभाभावास्तन्वादीन् प्राप्तिं संस्थिताः । पापाः  
सौम्याः पठेरिन्नाः सर्वे नेष्टाव्ययाष्टमगाः इति जन्मन्याधा-  
नकाले प्रश्नकाले वेति ॥ ३ ॥

सौम्ये विलग्रेयदिवास्यवर्गे शीर्षोदये सिद्धि-  
मुपैतिकार्यम् ॥ अतो विपर्यस्तमा सिद्धिहे-

तुःकृच्छ्रेणसंसिद्धिकरंविमिश्रम् ॥ ४ ॥

टीका—अधुनाप्रश्नसमयेलाभादाशुभाशुभज्ञानमाह सौ-  
म्यइति सौम्यानांशुभानांग्रहाणांशुभगुरुशुक्रपूर्णचंद्राणाम-  
न्यतमेविलम्बेस्थितेयदिवास्यसौम्यग्रहस्यवर्गेतत्कालंविल-  
म्बेप्राप्तेगृहहोराद्रेष्काणनवमभागद्वादशांशकद्विंशःवर्गःप्र-  
त्येतव्योग्रहस्ययोयस्यविनिर्दिष्टइतिवर्गलक्षणमुक्तम् अ-  
थशीर्षोदयेपृच्छा लग्नेमेपायाश्चत्वारःसधन्विमकराःक्षपा  
बलाज्ञेयाः पृष्ठोदयाविमिथुनाशिरसान्येषुभयतोमीनः इ-  
तिराशिपृष्ठोदयत्वंशीर्षोदयत्वंचोक्तम् एतेषामन्यतमेयदि  
विलम्बेपृच्छतोभवतितत्कार्यंसिद्धिसाध्यतामुपैतिगच्छति  
अतोविपर्यस्तमिति अतोऽस्मात्पूर्वोक्ताद्विपर्यस्तंविपरीत  
मस्ति असिद्धिहेतुरसाध्यतायाःकारणम् एतदुक्तंभवति  
पापग्रहेणविलम्बस्थेनपापवर्गेवाविलम्बगतेपृष्ठोदयेवालम्बग-  
तेप्रष्टुःकार्यंनसिद्ध्यति कृच्छ्रेणसंसिद्धिकरंविमिश्रं तत्पू-  
र्वोक्तंविमिश्रितंसंकीर्णयादिभवेत्तदाप्रष्टुःकृच्छ्रेणक्लेशेनसं-  
सिद्धिकरंकार्यसाधकंभवति एतदुक्तंभवति पापसौम्यौ-

द्वावपिलग्रस्थौभवतः पापसौम्यौवर्गस्थौवाउभयोदयो  
मीनोवाशीर्षोदयःपापयुक्तःपाववर्गस्थोवापृष्ठोदयःसौम्य-  
युक्तःसौम्यवर्गस्थोवा उभयोदयोवातदाक्लेशेनसिद्धिरुद्भ-  
वति तत्रचवलाधिकयान्निश्चयइति ॥ ४ ॥

होरास्थितःपूर्णतनुःशशाङ्कोर्जवेनदृष्टोय  
दिवासितेन ॥ क्षिप्रंप्रनष्टस्यकरोतिलब्धि  
लाभोपयातोवलवाञ्छुभश्च ॥ ५ ॥

टीका—अधुनानहलाभज्ञानमाह होरास्थितइति श-  
शाङ्कश्चंद्रःपूर्णतनुःपरिपूर्णमंडलः दशमीमारभ्यरुष्णप-  
ञ्चमीयावत् पूर्णतनुर्भवति तथाचयवनेश्वरः मासेचशुक्र-  
प्रतिपत्प्रवृत्तेःपूर्णःशशीमध्यबलोदशाहे।भेष्टोद्वितीयेल्पब-  
लस्तृतीयेसौम्यस्तुदृष्टोवलवान्सदैव ॥ एवंपूर्णतनुःशशां-  
कःहोरायांलग्नेस्थितःहोरेतिलग्रंभवनस्यचाङ्गमिति लग्न-  
स्यहोराव्यपदेशःतत्रस्यःशशीर्जवेनगुरुणादृष्टोऽवलोकि-  
तोयदिवाभितेनगुकेणदृष्टोभवति यदिवेत्ययंनिशानोदि-  
ष्टे क्षिप्रमाश्वेचमनष्टस्यापहनस्पद्रव्यादेर्लब्धिलाभंक्र-

संस्कृतटीकासाहता ।

२३११ २-१६-१३ १६६

रोति लाभोपयातइति अथवा शुभःसौम्यग्रहःबलवान्  
वीर्ययुतोलाभेएकादशस्थानेउपयातःप्राप्तोभवति तथापि  
चशब्दात्क्षिप्रमेवनष्टस्यलब्धिकरोतीति ग्रहाणांस्थान-  
दिक्चेष्टाकालबलंजातकेप्रोक्तम् बलवान्मित्रस्वगृहो-  
च्चैरित्यारभ्यस्वदिनादिष्वशुभशुभाइत्येतदंतम् ॥ ५ ॥

स्वांशेविलग्नयेदिवात्रिकोणेस्वांशेस्थितःप  
श्यतिधातुर्चिताम् ॥ परांशकस्थश्चकरोति  
जीवंमूलंपरांशोपगतःपरांशम् ॥ ६ ॥

टीका—अधुनाहृतनष्टमुष्टिगतचितितानां धातुमूल-  
जीवानांपरिज्ञानमाह स्वांशेति यःकश्चिद्ग्रहस्तत्कालंस्वां-  
शेआत्मीयनवांशकेस्थितःविलग्नप्रभलग्नेतत्कालोदितंस्वां-  
शंतस्यैवग्रहस्यात्मीयनवांशकं तच्चपश्यत्यवलोकयति-  
तदाप्रष्टुःधातुर्चितांवदेत् सुवर्णादिमृत्तिकांतंधातुद्रव्यम्  
एतदुक्तंभवति स्वांशकस्थोग्रहःस्वांशकयुक्तंलग्नंपश्यति  
तदाधातुर्चितांप्रवदेत् अथवालग्नगतंस्वांशंनपश्यतितदात्रि



स्वांशं पश्यति नवमस्थानं पंचमस्थानं वा स्वांशकसमेतं पश्य-  
तीत्यर्थः यतो लग्नपंचमनवमानामेक एवांशस्तुल्यकालमु-  
देति एतदुक्तं भवति स्वनवांशकस्थो ग्रहो लग्नपंचमनवमा-  
नामन्यतमं स्वांशकयुक्तं पश्यति तदा धातुचिंतां वदेत् तत्रा-  
पि धाम्याधाम्यप्रविभागो ग्रहांशकवशाद्वाच्यः पापग्रहां-  
शकमवस्थितस्य धाम्यम् सौम्यग्रहांशकसमवस्थितस्या-  
धाम्यमिति परांशकस्थस्तु करोति जीवमिति यः कश्चि-  
द्ब्रह्मः परनवांशकस्थोऽन्यग्रहनवभागावस्थितो विलग्नगतं  
स्वांशं पश्यति त्रिकोणयोरन्यतमगतं वा तदा जीवचिन्तां-  
वदेत् पुरुषादिसरीसृपांतो जीवः तत्रादिग्रहयुक्तनवांशक-  
वशात् द्विपदसरीसृपादिविभागः मिथुनकन्यातुलाधनुः-  
पूर्वार्धकुंजादेवानराः पक्षिणश्च द्विपदा ज्ञेयाः मेघवृषमिहध-  
न्विपराधीभनुष्पदाः कर्कटवृश्चिकमकरमीनाः सरीसृपाः  
तत्र मीनो ह्यपदः अन्ये तु बहुपदाः मूलं परांशोपगतः परां-  
शमिति यः कश्चिद्ब्रह्मः परांशोपगमोऽन्यग्रहनवांशकम-  
वस्थितो विलग्नगतं परनवांशकं त्रिकोणयोरन्यतमगतं

वापश्यतितदामूलं करोति मूलचिंतां प्रवेदेत् एतद्यतः प्रायः  
 संभवतितद्ब्रह्मदर्शनाज्ज्ञेयम् वृक्षादितृणांतंमूलं तत्रापिग्रह  
 युक्तनवांशकवशात्स्थलजलत्वंज्ञेयं कर्कमकरमीनाः जल-  
 जाः अन्येतुसर्वेस्थलजा इति तथाचचिंतासिद्धिप्रश्नज्ञान  
 मुक्तं स्वांशोस्थितो विलग्नप्रदाग्रहः स्वांशकं निरीक्षेत धातो-  
 स्तदानुचिंतां करोति परसंस्थितो जीवपरभागसन्निविष्टः  
 परांशकं प्राग्विलग्नमायातम् पश्यति मूलं प्रवेदे देवं नवपं-  
 चमेज्ञेयम् ॥ ६ ॥

धातुंमूलंजीवमित्योजराशौयुग्मेविंद्यादेत-  
 देवप्रतीपम् ॥ लग्नेयोऽंशस्तत्क्रमाद्गण्यएव  
 संक्षेपोऽयंविस्तरात्तत्प्रभेदः ॥ ७ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायां  
 पट्टपंचाशिकायां होराध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

टीका—एतदेवपुनरपिप्रकारांतरेणाह धातुमिति मेप-  
 मिथुनसिंहतुलाधनुःकुंभाःओजराशयः वृषकर्ककन्यावृ-  
 श्चिकमकरमीनायुग्मराशयः

प्रथमनवांशकोदयेधातुं प्रवदेत् द्वितीये मूलं तृतीये जीवं पु-  
नरपि चतुर्थे धातुं पंचमे मूलं षष्ठे जीवं पुनः सप्तमे धातुम् अष्ट-  
मे मूलं नवमे जीवमिति युग्मे विद्यादेतदेव प्रतीपम् युग्मे यु-  
ग्मराशौ लग्नगतेन वांशकक्रमेणैतदेव पूर्वोक्तं प्रतीपं विपर्य-  
येण विद्यात्जानीयात् तेन प्रथमनवांशकोदये जीवं द्वि-  
तीये मूलं तृतीये धातुं पुनश्चतुर्थे जीवं पंचमे मूलं षष्ठे-  
धातुं पुनः सप्तमे जीवम् अष्टमे मूलं नवमे धातुमिति एवमने-  
न प्रकारेण क्रमात्परिपाठ्यालम्बे विलम्बे योऽशो यो नवभाग-  
स्तत्कालमुदितः स यावद्भ्रमयोग्यनीयः अत्र चलग्रनवां-  
शकवशात्प्राग्वयोनिविभागः केचित् द्रेष्काणत्रितये-  
यथासंख्यं धातुं मूलं जीवमित्योजराशौ युग्मे विद्यादेतदेव प्र-  
तीपमिति वर्णयन्ति तच्चायुक्तम् यस्मात्पुरस्तादाचार्य-  
एव वक्ष्यति अंशकाज्ज्ञायते द्रव्यमिति अयं संक्षेपः समा-  
सोक्तः विस्तरात् व्यासेनास्यैवार्थस्य प्रभेदः स्पष्टता अ-  
भिधीयत इति ॥ ७ ॥

इति श्रीमद्वेत्तलविरचितायां षट्पञ्चाशिकायां  
होराविवृतौ संक्षेपाद्धोराध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

वृषसिंहवृश्चिकघटैर्विद्धिस्थानंगमागमौन-  
स्तः॥नमृतंनचापिनष्टंनरोगशांतिर्नचाभि-  
भवः ॥ १ ॥ तद्विपरीतंतुचरैर्द्विशरीरैर्मि-  
श्रितंफलंभवति ॥ लग्नैर्द्वोर्वक्तव्यंशुभदृ-  
ष्ट्याशोभनमतोऽन्यत् ॥ २ ॥

टीका—अथातोगमागमाध्यायोव्याख्यायते तत्रादावे-  
वस्थानगमागमजीवितमरणरोगशांतिपराजितवज्ञानमाह  
वृषसिंहेति वृषसिंहवृश्चिकाःप्रसिद्धाः घटःकुंभःएतेस्थिर-  
राशयः एतैर्वृषसिंहवृश्चिकघटैः एतेषामन्यतमेलनंप्राप्ते-  
स्थानंविद्धि जानीहि प्रदुःस्थानलाभोभवति गमागमौन-  
स्तः गमश्वागमश्वागमागमौतौनस्तः नभवतः नमृतंमरणं-  
नभवतिजीवत्येव नचापिनष्टं धात्वादिद्रव्यंधनम् अदर्शन-  
पथिस्थितंनष्टंननाशंप्राप्तम् अथवाविदेशस्थोनरस्तस्मा-  
त्स्थानान्नष्टःअन्यदेशंगतः नरोगशांतिःरोगोज्वरादिः  
तस्यशांतिःशमनंव्याध्यजिहूतस्यनभवति नचाभिभवः  
अभिभवःपराजयः सशत्रोःसकाशान्नभवति ॥

तद्विपरीतंतुचरैरिति चराःमेपकर्कटतुलामकराः तदि-  
त्यनेनानंतरोक्तं विद्धिस्थानमित्यादिकंसर्वप्रत्यवमृश्यते  
चरैःचराभिधानैःपृच्छालग्नस्थैस्तत्फलमनंतरोक्तंविपरीतं  
विपर्ययाद्भवति पूर्वमुक्तंविद्धिस्थानमिति तत्रचरैःस्थान-  
प्राप्तिर्नास्तीतिवाच्यागमागमौनस्तइतिपूर्वमुक्तं चरैर्गमा-  
गमौविद्येते पूर्वमुक्तंनमृतः चरैर्मृतइतिवक्तव्यं पूर्वमुक्तं-  
नचापिनष्टं चरैर्नष्टमितिवाच्यं पूर्वमुक्तंनरोगशांतिः च-  
रैःरोगशांतिर्भवतीतिवाच्यं पूर्वमुक्तंनचाभिभवः चरैर-  
भिभवोभवतीतिवक्तव्यम् द्विशरीरैर्मिश्रितंफलंभवति  
इति द्विशरीराः द्विस्वभावाः मिथुनकन्याधन्विनीनाः  
तैःपृच्छालग्नैर्मिश्रितंफलंभवति यत्स्थिरैरुक्तंयच्चरैरुक्तं  
तन्मिश्रितमुभयंफलंभवति भवतिनभवतीतिवासर्वमेतद्य-  
थोद्दिष्टम् तत्रायंनिश्चयः द्विस्वभावलग्नप्रथमेर्द्धेस्थिर-  
वत्फलंसर्ववदेत् द्वितीयेर्द्धेचरवत् यतस्तस्यप्रथमाद्धं  
स्थिरसमीपवर्तिद्वितीयंचरसमीपवर्तीति तथाचास्मदीये  
प्रश्नज्ञाने स्थिरराशौलग्नगतेस्थानप्राप्तिर्वदेन्नचागमनम्

रोगोपशमोनाशोद्रव्याणां स्यात्पराभवो नात्र चरराशौ-  
 विपरीतं मिश्रं वाच्यं द्विमूर्त्युदये स्थिरवत्प्रथमेर्द्धे स्यादपरे  
 चरराशिवत्सर्वमिति लग्नेर्द्धोर्वक्तव्यमिति लग्नप्रश्नलग्नम्  
 इन्दुश्चन्द्रस्तयोर्लग्नेर्द्धोर्द्वयोरपि शुभदृष्ट्यासौम्यग्रहदर्शनेन-  
 शोभनं फलं वक्तव्यम् देहमतोरूपत्वात् लग्नेदूसौम्यदृष्टौ  
 संपत्करौ भवतः अतो न्यदिति अतोऽस्मादुक्ता द्विपरीतेन्य-  
 दशुभं वक्तव्यं तेन लग्नेदूपापदृष्टौ यदि भवतस्तदा सर्वपृच्छा  
 स्वशोभनं फलं वक्तव्यम् अर्थादेकैकस्मिन्नुभयदृष्टेर्मध्य-  
 मं फलं भवति ॥ २ ॥

सुतशत्रुगतैः पापैः शत्रुमार्गान्निवर्तते ॥

चतुर्थगैरपि प्राप्तः शत्रुभग्नो निवर्तते ॥ ३ ॥

टीका—अधुना शत्रोर्मार्गनिवृत्तिज्ञानमाह सुतशत्रुगतै-  
 रिति सुतश्च शत्रुश्च सुतशत्रू अनयोर्गतैः सुतस्थानं पंचमं रि-  
 पुस्थानं षष्ठम् अनयोर्द्वयोरपि स्थानयोः एकस्मिन्वा पापैः  
 सूर्यभौमशनिभिः प्रश्नलग्नाद्गतैः समवास्थितैः प्रष्टुः शत्रुः रि-  
 पुर्मार्गात्पथः निवर्तते गच्छति तेरेव पापै-

समवास्थितैः अपिशब्दः सम्भावनायां प्राप्तोपिशत्रुर्निकट  
स्थोभग्नः पराजितो निवर्तते प्रतीपंगच्छतीत्यर्थः ॥ ३ ॥

झपालिकुंभकर्कटारसातलेयदास्थिताः ॥

रिपोः पराजयस्तदाचतुष्पदैः पलायनम् ॥ ४ ॥

चरोदये शुभः स्थितः शुभं करोति यायिनाम् ॥

अशोभनैरशोभनं स्थिरोदयेऽपि वा शुभम् ॥ ५ ॥

टीका—अथान्ययोगांतरमाह झपेति झपोमीनः अ-

लिर्वृश्चिकः कुंभकर्कटौ प्रसिद्धौ एते रसातले लघाच्चतुर्थस्थाने  
स्थिता एतेषामन्यतमः प्रथमलघाच्चतुर्थस्थाने यदा समव-  
स्थितो भवति तदा रिपोः शत्रोः पराजयोऽभिभवो भवति च-  
तुष्पदैः पलायनमिति मेघवृषसिंहधन्विपरार्धाश्चतुष्पदाः  
एतेषामन्यतमेलघाच्चतुर्थस्थे शत्रोः पलायनमपसर्पणं भवती-  
त्यर्थः ॥ ४ ॥ अथ यायिनां प्रतिशुभाशुभमाह चरोदय इति  
चरोदये चरराशुद्रमेतस्मिंश्च शुभग्रहाणां बुधजीवशुक्राणां  
अन्यतमः स्थितश्चेत् यायिनां गच्छतां शुभं श्रेयः करोति  
बुधधाति तस्मिन्नेव चरोदये अशोभनैः स्थितैः पापग्रहाणां

रविभौमार्कजानामन्यतमेस्थितेतेषामेवयायिनामशोभन-  
मश्रेयःकरोति स्थिरोदयेपिवाशुभम् स्थिराणामन्यत-  
मस्योदयेपापसंयुक्ते विकल्पेनशुभंभवति तत्स्थानंपापग्र-  
हस्यस्वक्षेत्रम् उच्चमूलत्रिकोणंमित्रक्षेत्रंवाभवति तदाशुभ-  
मन्यथानशुभमित्यर्थः केचित्स्थिरेऽष्टमेऽपिवाशुभमिति  
पठन्ति स्थिरराशौलग्नाष्टपापसंयुक्तेवाशुभंप्राग्वदिति ॥ ५ ॥

स्थिरेशशीचरोदयेनचागमोरिपोर्यदा ॥  
तदागमंरिपोर्वदेद्विपर्ययेविपर्ययम् ॥ ६ ॥  
स्थिरेतुलग्नमागतेद्विरात्मकेतुचन्द्रमाः ॥  
निवर्ततेरिपुस्तदासुदूरमागतोऽपिसन् ॥ ७ ॥  
चरेशशीलग्नगतोद्विदेहःपथोर्ध्वमागत्यनिव-  
र्ततेरिपुः ॥ विपर्ययेचागमनंद्विधास्यात्परा-  
जयःस्यादशुभेक्षितेतु ॥ ८ ॥

टीका—अथ शत्रोर्गमागमज्ञानमाह स्थिरेशशीति  
स्थिरेस्थिरराशौशशीचन्द्रोन्नवति चरोदयेचरराशौलग्न-  
तेप्रभललग्नेप्रभकालेयदारिपोःशत्रोर्नचागमः ॥



विद्यते तदा तस्मिन्नेव प्रश्नो रिपो रागममागमनं वदेद्ब्रूयात् वि-  
 पर्यये विपर्ययमिति अस्मादेव पूर्वोक्ता द्विपर्यये अन्यथा त्वे-  
 पर्ययं विपरीतमेव वक्तव्यं एतदुक्तं भवति चरेशशिनि स्थि-  
 रराशौ लग्नगते यदि रिपो रागमनं श्रूयते तदा तस्मिन् प्रश्ने ना-  
 गच्छतीति वदेत् ॥ ६ ॥ अथ शत्रुनिवृत्तिज्ञानमाह स्थिरे-  
 त्विति स्थिरराशौ लग्नमागते तत्काल लग्नप्राप्ते द्विरात्मके-  
 द्विस्वभावे राशौ यदा चन्द्रमाः शशी भवति तदारिपुः शत्रुः  
 सुदूरमागतोऽपि सन् स्वस्थानात् सुतरां दूरमागतोऽपि निव-  
 र्त्तते प्रतीपंगच्छतीति अपिशब्दः सम्भावनायाम् ॥ ७ ॥ अ-  
 थान्ययोगान्तरमाह चरेशशीति चरे चरराशौ शशी  
 चन्द्रमा भवति तथा लग्नगतः प्राग्लग्नस्थो द्विदेहो द्वि स्वभावो  
 राशिर्यदा तस्मिन्काले पथो मार्गस्यार्धमागत्य निवर्त्तते प्रती-  
 पंगच्छति तु शब्दोऽवधारणे विपर्ययइति विपरीतेशत्रो राग-  
 मनं द्विप्रकारेण स्याद्भवेत् एतदुक्तं भवति द्विस्वभावराशि-  
 स्थेशशिनि चरराशौ लग्नगते शत्रो रागमनं बलवन्न भवेत्  
 पराजयः स्यादशुभेक्षिते त्विति तस्मिन्नेव विपरीते योगे

विपरीतेचंद्रलग्नेवाशुमेक्षितेपापग्रहसंदृष्टेशत्रोःसकाशात्प्र-  
 द्युःपराजयोऽभिभवः स्याद्भवेत् एतदुक्तंभवति द्विस्व-  
 भावराशिस्थितेशशिनि चरराशौलग्नगतेद्वयोरपिपापह-  
 द्याशत्रोरागमनंद्विधाभवति समागमश्चपराजयंकरोती-  
 त्यर्थः ॥ ८ ॥

अर्काकिंज्ञासितानामेकोपिचरोदयेयदाभव-  
 ति ॥ प्रवदेत्तदाशुगमनंवक्रगतैर्नैतिवक्त-  
 व्यम् ॥ ९ ॥ स्थिरोदयेजीवशनैश्चरेक्षिते  
 गमागमौनैववदेत्तुपृच्छतः ॥ त्रिपंचपष्टा-  
 रिपुसंगमायपापाश्चतुर्थाविनिवर्तनाय ॥ १० ॥

टीका--अन्यदपिगमागमावाह अर्केति अर्कःआ-  
 दित्यःआर्किःसौरिःज्ञःबुधःसितःशुक्रःएषामध्येएकोऽपि-  
 ग्रहोयदाचरोदयेचरराशौलग्नगतेस्थितोभवतितदाआशु-  
 क्षिप्रमेवयियासोर्गमनंवदेद्ब्रूयात् राविवर्ज्यमन्येषामेकत-  
 मोपियदाचराशौलग्नगतोभवतिसचवक्रगतैःप्रतीपगतिमा-  
 श्रितोभवति तदायियासोर्गमनंनेतिवक्तव्यम् याताः

च्छतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ अथयोगान्तरमाह स्थिरोदयइति  
 स्थिरराशौ लग्नगतेयस्मिंश्चजीवशनैश्वरेक्षितेबृहस्पतिसौ-  
 रिभ्यांदृष्टेष्टच्छतःप्रष्टुः गमागमौनैववदेत् ब्रूयात् शत्रुग-  
 मागमौनैवभवतइत्यर्थः तस्मिन्नेवजीवशनैश्वरेक्षिते पापाः  
 पापग्रहाः त्रिपंचपष्ठास्तृतीयपंचमपष्ठस्थानस्थाभवन्ति त-  
 दारिपोःशत्रोःसंगमायभवन्ति प्रष्टुःशत्रुणासहसंयोगोभव-  
 तीत्यर्थः अस्मिन्नेवपूर्वोक्तयोगे पापाअशुभग्रहाः चतुर्था-  
 श्वतुर्थस्थानस्थास्तस्यैवशत्रोर्विनिवर्तनाय प्रतीपगमना-  
 यभवन्ति शत्रुर्विनिवर्ततइत्यर्थः ॥ १० ॥

नागच्छतिपरचक्रंयदार्कचंद्रौचतुर्थभवन-  
 स्थौ ॥ बुधगुरुशुक्राहिवुकेयदातदाशीघ्र  
 मायाति ॥ ११ ॥ मेपधनुःसिंहवृषायद्युद-  
 यस्थाभवन्तिहिवुकेवा ॥ शत्रुर्निवर्ततितदा  
 ग्रहसहितावावियुक्तावा ॥ १२ ॥

टीका—अथान्यद्रमनागमनाययोगान्तरमाह नागच्छ-  
 तीति अर्कःआदित्यः चंद्रःशशी तौलग्राहदाचतुर्थभवन-

स्थौचतुर्थस्थानगतौभवतः तदापरचक्रं नागच्छति नाया-  
ति शत्रुसमूहो नायातीत्यर्थः बुधगुरुशुक्राः हिवुके चतुर्थ  
स्थाने यदा स्थिता भवन्ति तदापरचक्रं शीघ्रमाशु आयाती-  
त्यर्थः ॥ ११ ॥ अथयोगान्तरमाह मेघधनुरिति एषामे-  
घधनुः सिंहवृषाणां मध्ये यद्येकतम उदयस्थस्तत्काललग्न-  
तो भवति वा इत्यथवा तात्कालिकात् प्रभलघ्नाद्विवुके  
चतुर्थस्थाने एषामध्यादन्यतमो भवति ते च ग्रहेः सहिताः  
समेताः रहिता वा तदा तस्मिन्नेव काले शत्रुर्निवर्तते प्रतीपग-  
च्छतीत्यर्थः ॥ १२ ॥

स्थिरराशौ यद्युदये शनिर्गुरुर्वा स्थितस्तदा-  
शत्रुः ॥ उदये रविर्गुरुर्वा चरराशौ स्यात्त-  
दा गमनम् ॥ १३ ॥ ग्रहः सर्वोत्तमवलोल-  
गाद्यस्मिन् ग्रहे स्थितः ॥ मासैस्तत्तुल्यसं-  
ख्याकैर्निवृत्तियातुरादि शेत् ॥ १४ ॥  
चरांशस्येग्रहे तस्मिन्कालमेवं विनिर्दिशेत् ।

टीका—अन्यच्छत्रोरनागमनप्रकारमाह स्थिरराशा-  
 विति उदयेतत्काललग्नेस्थिरराशौतत्रैवशनिःसौरिःगुरुः  
 जीवोवाभवति तदाशत्रुःरिपुःस्वस्थानाच्चलितः तत्रैव  
 तिष्ठति अथवाचरराशौलग्नगतेतत्रच रविर्गुरुर्वाभवति  
 तदाशत्रोरागमनं आगमःस्याद्भवेत् ॥ १३ ॥ अथ  
 यातुर्निवृत्तिज्ञानार्थयोगंश्लोकद्वयेनाह ग्रहेति सर्वोत्तम-  
 बलोग्रहःलग्नायस्मिन्ग्रहेयावत्तमेस्थानेस्थितः सर्वेषामुत्त-  
 मबलःप्रधानबलोपेतःतत्तुल्यसंख्याकैस्तत्तुल्यातत्समासं-  
 ख्याप्रमाणंयेषांमासानां तैः यातुःजिगमिषोःनिवृत्तिनि-  
 वर्त्तनंप्रवासान्निर्दिशेद्भवेत् ॥ १४ ॥ चरांशस्थइति  
 तस्मिन्सर्वोत्तमबलेग्रहेचरांशस्थेचरराशिनवभागस्थेपू-  
 र्वोक्तकालमेवंविनिर्दिशेत् तत्तुल्यसंख्याकैर्मासैःस्थिर-  
 भागांशकस्थेस्थिरनवांशस्थेतमेवकालंद्विगुणंद्वयात्मकां-  
 शकेद्विस्वभावनवांशकेतमेवकालंत्रिगुणंवदेत् ॥ १५ ॥

यातुर्विलग्नजामित्रभवनाधिपतिर्यदा ॥  
 करोतिवक्रमावृत्तेःकालंतंश्रुवतेपरे ॥ १६ ॥

उदयर्क्षाच्चंद्रर्क्षंभवतिचयावद्दिनानितावद्भिः ॥  
 आगमनंस्याच्छत्रोर्यदिमध्येनग्रहःकश्चित् १७  
 इति वराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचिता-  
 यांषट्पंचाशिकायांगमागमाध्या-  
 योद्वितीयः ॥ २ ॥

टीका—अत्रैवमतांतरमाह यातुरिति विलग्नपृच्छालग्न-  
 तस्माज्जामित्रभवनंसप्तमस्थानंतस्याधिपतिः स्वार्मासय-  
 दायस्मिन्कालेवक्रंविपरीतंगमनंकरोतितंकालंयातुर्जिग-  
 मिषोरावृत्तेरावर्तनस्यप्रवासान्निवृत्तिःभवति अपरेआ-  
 चार्याःकृष्णादयोब्रुवतेकथयन्ति वक्रंचग्रहाणांयथासंभवं  
 योज्यम् तथाचयानुःपृच्छालग्नान्तममभवनाधिपोयदाव-  
 क्रोभवति तदावक्तव्यः प्रवासनिवृत्तयेकालः ॥ १६ ॥  
 अथशत्रोरागमनेदिनप्रमाणमाह उदयेति उदयर्क्षमुदय-  
 लग्नं चंद्रर्क्षंचंद्रराशिःपृच्छाकालेयत्रचंद्रमाःस्थितस्तस्मा  
 दुदयर्क्षाच्चंद्रर्क्षयावत्संसृत्यंभवति तावत्संख्यैर्दिनैःशत्रो-  
 रागमनंस्यात् यदिमध्यइति त ॥ चंद्रयोः ॥

यदिकश्चिद्ब्रह्मो न भवति तदैवं ग्रहसंभवेशत्रुरवश्यमेव न यातीत्यर्थः ॥ १७ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायां पट्टपञ्चाशिका-  
विवृतौ गमागमाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

दशमोदयसप्तमगाः सौम्या नगराधिपस्य वि-  
जयकराः ॥ आर्किर्ज्ञगुरुसिताः प्रभंगदा-  
विजयदानवमे ॥ १ ॥ पौरास्तृतीयभवना  
द्धर्माद्वायायिनः शुभैः शुभदाः ॥ व्ययदश-  
माये पापाः पुरस्य नेष्टाः शुभायातुः ॥ २ ॥

टीका—अथ जयपराजयाध्यायो व्याख्यायते तत्रा-  
दावेव जयपराजयज्ञानमाह दशमोदयेति उदये लग्ने  
दशमसप्तमे प्रसिद्धे एते पुस्त्याने पुलग्रात्सौम्याः शुभग्रहाः  
गताः समवस्थिताः पृच्छालग्न्येनगराधिपस्य पुरस्वामि-  
नो राज्ञो विजयकराः विशेषेण जयंकुर्वन्ति आरोभी-  
मः आर्किः सौरिः एतौ प्रश्नलग्नात् नवमे स्थाने स्थि-  
तौ प्रष्टुः प्रभंगदोषकपेण भंगं पलायनं ददतः तथा ज्ञो बुधः

गुरुःजीवः सितःशुकः एतेलग्नान्नवमेस्थाने स्थिताः  
विजयदाःविशेषेणजयदाभवन्ति प्रष्टुःसंग्रामेविजयो भ-  
वतीत्यर्थः ॥ -१ ॥ अथ नगरयायिनः कस्यवि-  
जयोभवतीत्येतत्परिज्ञानमाह पौरास्तृतीयेति पुरेभवाः  
पौराःनागराःपृच्छालग्नान्तृतीयभवनप्रभृतियद्राशिपङ्कम-  
ष्टमस्थानंयावत् तावन्नागराज्ञेयाः एतद्राशिपङ्कपौरा-  
णांशुभाशुभत्वेज्ञेयमित्यर्थः धर्माद्यायायिनः धर्मान्नवम  
स्थानात्प्रभृतिराशिपङ्कद्वितीयस्थानंयावत् तावत्स्थि-  
ताज्ञेयाः एतद्राशिपङ्कयायिनांशुभाशुभत्वेज्ञेयमित्यर्थः  
येनादौयात्रायामुयोगःकृतःसयार्यायेनपश्चात्कृतः सनाग-  
रःवाशब्दोऽत्रचार्थेज्ञेयः शुभैःशुभदाः एतेयथाविभागक-  
ल्पिताराशयोयस्यशुभैः सौम्यग्रहेः संयुक्ताभवन्ति तस्य  
शुभदाभवन्तीत्यर्थः अर्थायस्यपापैः संयुक्तास्तस्य  
पराजयदाः तथाचप्रश्नेधर्माद्यैश्चक्रदलेयायिनोनागरास्तृ-  
तीयादौविजयः सौम्ययुतेस्यात्पुरभागेऋरसंयुतेभंगः त-  
थाचास्मदीयेप्रश्नज्ञानेनवमायेचक्रदलेविज्ञेयोयाये .



तीयादौ पौराः शुभसंदक्षाभागे विजयः पुरेभंगइति अर्था-  
 देवभागद्वयेपि पापसौम्यैर्युक्तेव्यामिश्रंफलंभवति नजयो  
 नपराजयइति व्ययदशमायेपापाइति व्ययंद्वादशंदशमंप्र-  
 सिद्धम् आयमेकादशंसमाहारेएकवद्भावः तत्रपापाः पा-  
 पग्रहाः पृच्छालग्न्यात्समवस्थिताभवंतितदापुरस्यनगरस्य  
 नेष्टाः नशुभाभवंति यातुर्यत्पुरंतस्यनशुभाः यातुः पुनः  
 शुभकराः उपचयकराइत्यर्थः ॥ २ ॥

नृराशिसंस्थाह्युदयेशुभाः स्युर्व्ययायसंस्था  
 श्रयदाभवंति ॥ तदाशुसंधिप्रवदेन्नृपाणां  
 पापैर्द्विदेहोपगतैर्विरोधम् ॥ ३ ॥

टीका—अथसंधिविरोधज्ञानार्थयोगांतरमाह नृरा-  
 शीति नृराशयः पुरुषराशयः पुरुषाकृतयोराशयः नृरा-  
 शयः मिथुनकुंभतुलाकन्याः तथाआचार्यएवज्ञापकः तु-  
 लाथकन्यामिथुनोघटश्चनृराशयइति शुभाः सौम्यग्रहाः बु-  
 धशुक्रबृहस्पतयः एतेउदयेपृच्छालग्न्येस्थिताः स्युर्भवेयुः  
 ।थवातएवसौम्यग्रहाः नृराशिसंस्थाव्ययायसंस्था-

श्वभवंति व्ययंद्वादशम् आयमेकादशं चशब्दःसमुच्चये  
 अनयोरपिसंस्थाःसमवस्थितायदाभवंति तदाआशुक्षिप्र-  
 मेवनृपाणांसंधिसंधानंप्रवदेद्व्यात् पापैरिति पापारविजौ  
 मशानिक्षीणचंद्राः द्विदेहाःद्विस्वभावराशयः पापैरशुभग्र-  
 हेद्विदेहोपगतैर्द्विस्वभावराशिपुसमवस्थितैर्नृणामेवंविरोधं  
 विग्रहंप्रवदेत् ॥ ३ ॥

केंद्रोपगताःसौम्याःसौम्यैर्दृष्टानृलग्नाःप्री-  
 तिम् ॥ कुर्वतिपापदृष्टाःपापास्तेष्वेवविप-  
 रीतम् ॥४॥द्वितीयेवातृतीयेवागुरुशुक्रौय-  
 दातदा ॥ आश्वेवागच्छतेसेनाप्रवासीचन-  
 संशयः ॥ ५ ॥

इति वराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचि-  
 तायांपट्टपंचाशिकायांजयपराजयो नाम  
 तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

टीका—योगांतरमाह केंद्रोपगताइति केंद्राणिलग्न-  
 तुर्यसप्तमदशमानि तेषूपगताः समवस्थिताः

शुभग्रहेः अथवातएवसौम्याःनृलग्नाःनृराशिपुत्रागुक्ते-  
 पुस्थिताःसौम्यैःशुभग्रहैश्चदृष्टाःपरस्परमवलोकयन्तीत्यर्थः  
 एवंविधाप्रीतिसंधिकुर्वन्तिनिवृत्तिप्रापयन्ति तेषुकेंद्रेषुसम-  
 वस्थिताःपापाःतेचपापदृष्टाःपरस्परंपापैरवलोकिताःविप-  
 रीतंविपर्ययमप्रीतिविग्रहंकुर्वन्ति ॥ ४ ॥ अथ सेना-  
 गमनज्ञानमाह द्वितीयेति प्रश्नलग्नायदाद्वितीयेवायथा-  
 तथागुरुशुक्रौजीवसितौभवतः तदाचमूः सेनाभाश्वेवाग-  
 च्छतिक्षिप्रमेवायाति प्रवासीअन्यदेशस्थः आश्वेवाग-  
 च्छतिनसंशयः निर्विकल्पंयथास्यात्तथा ग्रहाणांक्रमवि-  
 वक्षार्थम् कदाचिद्वावेवद्वितीयेवाद्वावेवतृतीयेवाएकोद्वि-  
 तीयेवातृतीयेऽप्येकएवेति ॥ ५ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांपट्टपञ्चाशिकाविधृतौजय-  
 पराजयाऽध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

केंद्रत्रिकोणेषुशुभस्थितेषुपापेषुकेंद्राष्टमव-  
 र्जितेषु ॥ सर्वार्थसिद्धिप्रवदेन्नराणांविपर्यय-  
 स्थेषुविपर्ययःस्यात् ॥ १ ॥ त्रिपंचलाभा

स्तमयेषुसौम्यालाभप्रदानेष्टफलाश्चपापाः ॥  
तुलाथकन्यामिथुनंघटश्चनृराशयस्तेषुशु-  
भंवदंति ॥ २ ॥

टीका—अधुनाशुभाशुभलक्षणाध्यायोव्याख्यायते  
तत्रादावेवप्रष्टुः शुभाशुभज्ञानमाह केंद्रेति केंद्राणि लग्न १  
चतुर्थ ४ सप्तम ७ दशमानि १० त्रिकोणसंज्ञेनवपंचमे शुभाः  
सौम्यग्रहाः केंद्रेषुत्रिकोणेषुशुभस्थितेषुशुभाः स्थिताये-  
षुसौम्यग्रहयुक्तेष्वित्यर्थः शुभान्वितेष्वितिपाठः तथापा-  
पेषुपापग्रहेषुकेंद्राष्टमस्थानंवर्जयित्वा अन्यत्रसमवस्थिते-  
षुसत्सुनराणांमनुष्याणांसर्वार्थसिद्धिंवदेत् सर्वेषांनिःशे-  
षाणामर्थानांसिद्धिं साधनंवदेद्भूयात् विपर्ययइति एषुपा-  
पसौम्येषुविपर्ययेविपरीते अन्यथास्थितेषु विपर्ययोवैप-  
रीत्यमेवस्याद्रवेत् एतदुक्तंभवति यदापापाःकेंद्रत्रिको-  
णाष्टमेपुज्जवंति सौम्याःकेंद्रत्रिकोणाष्टमचर्ज्यमन्यत्रज-  
वंति तदासर्वार्थानामसिद्धिंप्रवदेत् ॥ १ ॥ अधुनालाजाला-  
भज्ञानमाह त्रिपंचेति तृतीयपंचमेस्थानेप्रसिद्धेलाजएका-

( ३२ ) - पट्टपञ्चाशिका ।

दशम् अस्तमयंसप्तमं एतेषु सौम्याः शुभग्रहाः प्रष्टुर्लाभ-  
प्रदाः एष्वेवत्रिपंचलाभास्तमयेषु पापाअशुभग्रहाः नेष्ट-  
फला अनिष्टमशोभनंफलंकुर्वन्ति अर्थनाशं समारभन्ती-  
त्यर्थः तुलेति तुलाकन्यामिथुनाःप्रसिद्धाः घटःकुंभः  
एतेनरराशयःपुंराशयः एतेपुलग्रेषुसौम्यग्रहाधिष्ठितेषुशु-  
भंभद्रंमुनयोवदन्ति कथयन्तीत्यर्थः ॥ २ ॥

स्थानप्रदादशमसप्तमगाश्चसौम्यामानार्थ-  
दाःस्वसुतलग्नगताभवंति ॥ पापाव्यया  
यसहितानशुभप्रदाःस्युर्लग्नेशशीनशुभदो  
दशमेशुभश्च ॥ ३ ॥ इंदुद्विसप्तदशमा-  
यरिपुत्रिसंस्थंपश्येद्भूरुःशुभफलंप्रमदाकृतं  
स्यात् ॥ लग्नत्रिधर्मसुतनैधनगाश्चपापाः  
कार्यार्थनाशभयदाःशुभदाःशुभाश्च ॥ ४ ॥

टीका—अन्ययोगांतरमाह स्थानप्रदाइति सौम्याः  
शुभग्रहाः लग्नादशमेसप्तमेचस्थानेगताःसमवस्थिताःप्रष्टुः

तेषुस्थिताः सौम्याः मानार्थदाः स्युर्भवेयुः पापाव्ययेति  
पापाअशुभग्रहाः व्ययोद्वादशम् आयएकादशं तयोर्द्वयोः  
सहिताः नशुभप्रदाः स्युः भवेयुः नशुभफलंप्रयच्छन्ति लग्नइ-  
ति पापाइत्यनुवर्तते शशीचंद्रः पापोलग्नेस्थितोनशुभ-  
इति शुभफलंनददाति दशमेस्थानेसमवस्थितः पापरू-  
पोपिशुभफलोभवति श्रेयस्करोभवतीत्यर्थः ॥ ३ ॥ अन्य-  
च्चशुभाशुभज्ञानमाह इंदुमिति द्विशब्देनद्वितीयंस्थानमु-  
च्यते सप्तमदशमेप्रसिद्धे आयएकादशं रिपुस्थानंपष्ठं  
त्रिशब्देनतृतीयंस्थानमुच्यते एतेषुद्वितीयतृतीयसप्तमद-  
शमायारिपुत्रिपुसंस्थितः तमिदुंचंद्रंगुरुर्जीविः पश्येत्तदा-  
प्रष्टुः शुभफलंलाभादिकंप्रमदाकृतंस्त्रीहेतुकंस्याद्रवेत् लग्न-  
त्रिधर्मेति लग्नंपृच्छालग्नं त्रिशब्देनतृतीयस्थानं धर्म-  
स्थानंनवमं सुतस्थानंपंचमं नैधनमष्टमं एतेषुस्थानेषु-  
पापाःपापग्रहगताःसमवस्थिताःप्रष्टुःकार्यार्थनाशभयदाः  
कार्यस्यकृत्यस्यअर्थस्यधनस्यनाशंविघातंभयंभीतिंदद-

( ३४ ) पट्टपञ्चाशिका ।

तीत्यर्थः शुभदाःशुभाश्चेति एष्वेवलग्रादिपुस्थानेषु शुभाः  
सौम्यग्रहाःसमवस्थिताःशुभदाःशुभफलप्रदाइत्यर्थः ४ ॥

शुभग्रहाःसौम्यनिरीक्षिताश्चविलग्नसप्ताष्ट-  
मपंचमस्थाः ॥ त्रिपङ्कदशायैचनिशाक-  
रःस्याच्छुभंभवेद्रोगनिपीडितानाम् ॥ ५ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायां  
पट्टपञ्चाशिकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

टीका—अधुनारोगार्तस्यशुभाशुभज्ञानमाह शुभेति  
शुभग्रहाबुधगुरुशुक्राः विलग्नपृच्छालग्नं सप्तमाष्टमपंचम-  
स्थानानिप्रसिद्धानि एतेषुयथासंभवंशुभग्रहाःसमवस्थि-  
तास्तेचनिरीक्षिताः सौम्यैःशुभग्रहैरेवदृष्टाः एतदुक्तंभवति  
शुभग्रहदृष्टस्थानस्थाःपरस्परंपश्यंतियदा तदाएपयोगेन-  
केवलंयावन्निशाकरश्चंद्रमास्त्रिपङ्कदशायैचस्याद्भवेत् तृ-  
तीयपङ्कदशमानिप्रसिद्धानि आयमेकादशमेतेषामन्यतमे  
चंद्रमाभवतितदारोगनिपीडितानांव्याधिगृहीतानांशुभ-

मारोग्यं वदेद्व्यात् अर्थदेवयोगासंभवे सत्यशुभं वदेदिति  
योगे सति शुभं व्रूयात् ॥ ५ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायां पट्पं० शुभा-  
शुभाध्यायश्चतुर्थः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ प्रवासचिंताध्यायः ॥

दूरगतस्यागमनं सुतधनसहजस्थितैर्ग्रहैर्लगा-  
त् ॥ सौम्यैर्नष्टप्राप्तिर्लघ्वागमनं गुरुसिता-  
भ्याम् ॥ १ ॥ जामित्रे त्वथवापष्टे ग्रहः कन्द्रेऽ  
थवाक्पतिः ॥ प्रोपितागमनं विद्यात्रिकोणे  
ज्ञेयं सितेऽपि वा ॥ २ ॥

टीका—अधुना प्रवासचिंताध्यायो व्याख्यायते तत्रा-  
दावेवागमनार्थयोगमाह दूरगतस्येति सुतस्थानं पंचमं धन-  
स्थानं द्वितीयम् सहजस्थानं तृतीयम् एतेषु स्थानेषु लग्नात्ता  
त्कालिकात् ग्रहेरादित्यादिभिः सर्वैः समवस्थितैः दूर-  
गतस्य विप्रकृष्टस्थितस्य आगमनं संप्राप्तिर्वदेत् सौम्यैर्नष्ट  
प्राप्तिमिति सौम्यैः सौम्यैर्ग्रहैः बुधगुरुसिताक्षीणचंद्रैः ते



वस्थानेषु व्यवस्थितैः नष्टस्यापहतस्य वस्तुनः प्राप्तिं लाभं  
 वदेत् तस्यैव प्रवासो नष्टमासीत् स एव वा प्रवासी नष्टोऽदर्शनं  
 गतः तददर्शनं भवतीत्यर्थः लघ्वागमनं गुरुसिताभ्यामिति  
 गुरुर्बृहस्पतिः सितः शुक्रः आभ्यामेष्वेव स्थानेषु समवस्थि-  
 ताभ्यां लघ्वागमनं लघुनाल्पेनैव कालेन प्रवासिनामागम-  
 नं प्रवदेत् ॥ १ ॥ अथ योगान्तरमाह जामित्र इति जामित्रं  
 सप्तमं सप्तमस्थाने अथ पष्ठे वा पृच्छालग्नयः समवस्थितः त-  
 था चतुर्णां केंद्राणां च मध्यादन्यतमे केंद्रे वा कपति भवति त-  
 दाप्रोपितस्य प्रवासितस्यागमनं प्राप्तिं विद्याजानीयात् त्रि-  
 कोण इति त्रिकोणेन वपंचमेज्ञो बुधः सितः शुक्रः बुधेशुक्रे  
 वा त्रिकोणयोर्नवमपंचमस्थानयोरेवान्यतमस्थे द्वयोर्वा त्रि-  
 कोणस्थयोः प्रोपितागमनं विद्यादिति ॥ २ ॥

अष्टमस्थे निशानाथे कंटकैः पापवर्जितैः ॥

प्रवासी सुखमायाति सोम्यैर्लाभसमन्वितः ॥ ३ ॥

पृष्ठोदये पापनिरीक्षिते वा पापास्तृतीयो रिपु-

केंद्रगेवा ॥ सौम्यैरदृष्टावधबंधदाःस्युर्नष्टा-  
विनष्टामुपिताश्चवाच्याः ॥ ४ ॥

टीका--अथयोगान्तरमाह अष्टमस्थइति निशाना-  
थश्चंद्रमास्तस्मिन्प्रश्नलगादष्टमस्थे अष्टमस्थानंसमव-  
स्थितेकंदकानिकेंद्राणि लग्नचतुर्थसप्तमदशमानितैःपापव-  
र्जितैः प्रवासीपथिकः सुखेनाक्लेशेनायातिआगच्छति  
सौम्यैःशुभग्रहैःकेंद्रस्थैः प्रवासीलाभसमन्वितःलाभयुतः  
सुखमायाति ॥ ३ ॥ अन्ययोगान्तरमाह पृष्ठोदयइति  
पृष्ठोदयाःभेषकर्कटधन्विमकरमीनाः पृष्ठोदयेपृच्छालग्न्ये  
एतेषामन्यतमे तस्मिन्श्चपापनिरीक्षिते अशुभग्रहाव-  
लोकिते वाशब्दोत्रचार्थे एवंविधेयोगेप्रवासिनोवध-  
स्ताडनंबंधोबंधनंभवेत् अथवापापाअशुभग्रहाः लग्ना-  
चतुर्थीस्थानेस्थिताः सर्वएतेचसौम्यैः शुभग्रहैरदृष्टाअनव-  
लोकितास्तदाप्रवासिनोनष्टास्तस्मात्स्थानादन्यदेशंगताः  
अथवापापालगाद्रिपुस्थानेवागतास्तेचसौम्यैरदृष्टास्तदा  
प्रवासिनोमुपिताश्चौरैर्वाऽपहृताःस्युर्भवेयुः ॥ ५ ॥

नांविकल्पार्थः वधबन्धदाःस्युरिति पापानां विशेषणम् ४

ग्रहो विलग्राद्यतमे गृहे तु तेनाहता द्वादशरा-  
शयः स्युः ॥ तावद्दिनान्यागमनस्य विद्या-  
निवर्तनं वक्रगतेर्ग्रहेस्तु ॥ ५ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचि-  
तायां पट्टपञ्चाशिकायां प्रवासचिंता-  
यां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

टीका—अधुना प्रवासिनामागमनकालज्ञानमाह ग्रहो-  
विलग्रादिति विलग्रात्पृच्छालग्राद्यतमे यावत्संख्ये राशौ  
यः कश्चिद्ग्रहः स्थितः स च स्पष्टगतिस्तिष्ठेत् तेन तत्प्रमाणे-  
न द्वादशराशयः आहता गुणिताः कार्याः एतदुक्तं भवति द्वा-  
दशसंख्यमंकमास्थाप्य लग्नात्प्रभृतिग्रहांतरं राशिसंख्यया  
गुणयेत् तत्र यावत्संख्या भवंति तावत्संख्यानि दिनानि  
प्रवासिनः आगमनस्य विद्याज्जानीयात् तावद्भिः दिनैः  
अधिकभागच्छतीत्यर्थः निवर्तनं वक्रगतेरिति अथ स ग्र-

होवकगतिः- प्रतीपगतिस्तदा तावत्संख्यैर्दिनैःप्रवासिनः  
प्रवासान्निवर्तनंभवति ॥ ५ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांषट्पंचाशिकावि-  
वृतौप्रवासचिंताध्यायःपंचमः ॥ ५ ॥

अथनष्टप्राप्त्यध्यायः ॥

स्थिरोदयेस्थिरांशेवावर्गोत्तमगतेऽपिवा ॥

स्थितंतत्रैवतद्रव्यंस्वकीयेनैवचोरितम् ॥ १ ॥

टीका-अथनष्टप्राप्त्यध्यायोव्याख्यायते तत्रादावेव  
चौरज्ञानमाह स्थिरोदयइति स्थिरावृषसिंहवृश्विककुं-  
भाःएषामन्यतमस्योदयेतत्काललग्नतांप्राप्ते अथवायस्य  
कस्यचिद्राशेरुदयेतत्कालंस्थिरनवांशकेवर्तमाने अथ-  
वायस्यकस्यचिद्राशेर्वर्गोत्तमनवांशकोदये वर्गोत्तमनवां-  
शाश्वरादिपुप्रथममध्यमपर्यंतगाःइतिवर्गोत्तमनवांशकानां  
लक्षणंप्रोक्तम् एवंलग्नस्यवर्गोत्तमगतेनवांशकेवायदपहतं  
द्रव्यंनूनंतत्स्वकीयेनात्मीयेनैवकेनचिच्चोरितमपहतं

तत्रैवतस्मिन्नेवस्थानेस्थितम् अन्यथाअपरेणापहतं त-  
स्मात्तत्तत्स्थानाच्चलितमिति ॥ १ ॥

आदिमध्यावसानेषुद्रेष्काणेषुविलम्बतः ॥

द्वारदेशेतथामध्येगृहांतेचवदेद्धनम् ॥ २ ॥

पूर्णःशशीलग्रगतःशुभोवाशीर्पोदयेसौम्य

निरीक्षितश्च ॥ नष्टस्यलाभंकुरुतेतदाशु

लाभोपयातोवलवाञ्छुभश्च ॥ ३ ॥

टीका—अधुनास्थानज्ञानमाह आदिमध्येति द्रेष्काणाः  
प्रथमपंचमनवाधिपानामितिद्रेष्काणलक्षणंप्रागुक्तम् आ-  
दिद्रेष्काणःप्रथमःमध्येद्वितीयः अवसानेतृतीयः विलम्बं  
पृच्छालम्बं विलम्बतःविलम्बात्तात्काललम्बादित्थंभूतेषुद्रे-  
ष्काणेषु यथासंख्यंहृतंधनंविचं द्वारदेशेतथामध्येगृहांते  
चधनंस्थितंवदेत् एतदुक्तंभवति लग्नस्यप्रथमद्रेष्काणो-  
दयेहृतंधनंद्वारदेशेस्थितंवदेत् द्वितीयेद्रेष्काणोदयेगृह-  
मध्येब्रह्मस्थानसमीपे तृतीयेद्रेष्काणोदयेगृहांतेवेश्मप-  
श्चिमभागेवदेद्गृहादिति ॥ २ ॥ अधुनालाजालाज्जा-

नमाह पूर्णःशशीति पूर्णःपरिपूर्णमंडलःशशीचंद्रः सच  
लग्नः पृच्छालभेसमवस्थितः अथवाशीर्षोदयेलग्नगते  
तत्रैवशुभःसौम्यग्रहःसमवस्थितः सचसौम्यैःशुभग्रहैरेव  
निरीक्षितोदष्टः भवति तदाआशुक्षिप्रमेवनष्टस्यापहतस्य  
धनादेर्लाभंप्राप्तिकुरुतेविधत्ते लाभइति अथवालगाच्छाभे  
चैकादशेस्थानेशुभःसौम्यग्रहः बलवान्वीर्यवानुपयातः  
प्राप्तोभवति तथापि चशब्दान्नष्टस्याशुलाभंकुरुते अर्थादे-  
वोक्तयोगानामभावेहतंनलभ्यतइति ॥ ३ ॥

दिग्वाच्याकेंद्रगतैरसंभवेवावदेद्विलग्नर्क्षात् ॥  
मध्याच्च्युतैर्विलग्नान्नवांशकैर्योजनावा-  
च्या ॥ ४ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविर-  
चितायांपट्पंचाशिकायानष्टप्राप्त्य-  
ध्यायःषष्ठःसमाप्तः ॥ ६ ॥

टीका—अधुनादिगध्वनोऽप्रमाणमाह दिग्वाच्येति प्रा-  
च्यादीशारविसितकुजराहुयमेन्दुसौम्यवाक्पतयःइतिग्रहा  
णांदिशउक्ताः तत्रकेंद्रगतैर्ग्रहैर्दिग्दशावाच्यावक्तव्या

त्कालिकलग्नस्ययःकाश्चिद्ब्रह्मकेंद्रेसमवस्थितःतस्ययादि-  
 क् तस्यांहतंवित्तंगतंवदेत् तद्यथा सूर्ये लग्नचतुर्थसप्तमद-  
 शमानामन्यतमस्थानस्थेपूर्वस्यामेव आग्नेय्यांशुके भौमे  
 दक्षिणस्यां राहैनैर्ऋत्यां सौरौपश्चिमायां बुधे उत्तरस्यां  
 जीवे ईशान्यामिति द्वयोर्बहुपुर्वार्केद्रगतेष्वधिकबलादसं-  
 भवेवावदेद्विलग्नर्क्षात् अजवृषमिथुनकुलीराःपंचमनवमैः  
 सहैद्राद्या इति राशीनां दिशा उक्ताः असत्यविद्यमाने केंद्रे ग्रौ  
 र्विलग्नर्क्षात् विलग्नराशितो दिशं वदेद्भूयादिति तद्यथामेपरि-  
 हधनुःपुलगे पुहृतं वित्तं पूर्वस्यां दिशि गतम् एवं वृषकन्यामक-  
 रेपु दक्षिणस्यां मिथुनतुला कुंभेषु पश्चिमायां वृश्चिककर्कट-  
 मीने पूत्तरस्यां मध्याच्छ्युतश्चलितैरिति विलग्नं प्रश्नलग्नं तस्य  
 नवांशकानवभागास्तैर्मध्यात्पंचमनवमांशकाच्छ्युतैश्चलि-  
 तैर्योजनावाच्या एतदुक्तं भवति प्रश्नलग्ने प्रथमनवांशका-  
 त्प्रभृतिपंचमनवांशकं यावद्वर्तते तावद्धृतं वित्तं तस्मिन्नेव देशे  
 प्रागुक्तायां दिशि गतं वदेत् पंचमादंशकायावतः परतो-

शकाःअतीतास्तावन्तिथोजनानितद्विचंप्रागुक्तायांदिशि  
गतमिति ॥ ४ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांपट्टपंचाशिकाविवृ-  
तौनष्टप्राप्त्यध्यायःषष्ठःसमाप्तः ॥ ६ ॥

अथ मिश्रकाध्यायः ॥

विषमस्थितेऽर्कपुत्रेसुतस्यजन्मान्यथांग-  
नायाश्च ॥ लभ्यावरस्यनारीसमस्थितेतो-  
ऽन्यथावामम् ॥ १ ॥

टीका—अथमिश्रकाध्यायोव्याख्यायते तत्रादावेव  
गर्भिणीपुत्रदुहितृजन्मज्ञानंवरस्यकन्यालाभज्ञानंचाह वि-  
षमस्थितेइति अर्कपुत्रेशनैश्वरेप्रश्रलगाद्विषमस्थानस्थिते  
तृतीयपंचमसप्तमनवमैकादशानिविषमस्थानानि एषाम-  
न्यतमस्थानस्थेप्रष्टुःसुतस्यजन्मप्रादुर्भावंवेदेत् नन्वत्रल-  
ग्रस्यकथंविषमस्थानस्यगणनाक्रियते उच्यते अत्राचार्यो  
वराहमिहिरोज्ञापकः तथाच विहायलग्नंविषमर्क्षसंस्थः  
सौरोपिपुंजन्मकरोविलग्नात्।अन्यथांगनायास्तु अन्य-



थाअन्यप्रकारेणस्थितेर्केपुत्रेलग्न्यादंगनायाःस्त्रियाःजन्मव-  
देत् तेनद्वितीयचतुर्थपष्ठाष्टमदशमद्वादशानामन्यतमे  
स्थानस्थितेसौरे वरस्यनारीकन्यालभ्येतिवदेत्समस्थिते  
लग्नाद्विषमस्थानस्थेवामंविपरीतं नलभ्यतइत्यर्थः ॥ १ ॥

गुरुरविसौम्यैर्दृष्टस्त्रिसुतमदायारिगःशशी  
लग्नात् ॥ भवतिचविवाहकर्तात्रिकोणके-  
द्रेषुवासौम्याः ॥ २ ॥ चन्द्रार्कयोःसप्तम-  
गौसितार्कीसुखेष्टमेवापितथाविलग्नात् ॥  
द्वितीयदुश्चिक्वगतौतथाचवर्षासुवृष्टिप्रवदे  
न्नराणाम् ॥ ३ ॥

टीका—अधुनाविवाहज्ञानमाह गुरुरविसौम्यैरिति  
गुरुर्जीवोरविःसूर्यः सौम्योबुधः एतेर्दृष्टोभवलोकितः  
कीदृशः त्रिसुतमदायारिगः त्रिशब्देनतृतीयस्थानं सुत-  
स्थानंपंचममद्रस्थानंसप्तममायएकादशमरिस्थानंपष्ठं ल-  
ग्न्यादित्येषांस्थानानामन्यतमस्थानेगतः समवस्थितःश-  
शीचन्द्रोगुरुरविसौम्यैर्दृष्टोयदिभवतितदाप्रष्टुः विवाह-

स्यपाणिग्रहणस्यकर्ताविधाताभवति त्रिकोणकेंद्रेष्विति  
अथवासौम्याः शुभग्रहाः त्रिकोणकेंद्रेषुनवपञ्चमल-  
ग्रचतुर्थसप्तमदशमेषुयथासंभवंभवन्ति तदाप्रष्टुःविवाहो  
भवतीत्यर्थः वाशब्दोऽन्ययोगव्यवच्छेदकार्थः ॥ २ ॥  
अधुनावर्षासमयेवृष्टिज्ञानमाह चन्द्रार्कयोरिति चन्द्रः  
शशी अर्कःआदित्यः अनयोःसप्तमगौसितार्कीशुक्रशनी  
यथासंभवंयदिभवतः अथवाविलग्रादेवतेनैवप्रकारेणतावे-  
वसितार्कीद्वितीयस्थानेदुश्चिक्येवाभवतस्तयोर्वास्थानयो  
स्तदावर्षासुवृष्टिर्वर्षणंवदेत् ॥ ३ ॥

सौम्याजलराशिस्थास्तृतीयधनकेंद्रगाःसि  
तेपक्षे ॥ चन्द्रेवाप्युदयगतेजलराशिस्थे  
वदेद्वर्षम् ॥ ४ पुंवर्गलग्नगतेपुंग्रहदृष्टेवला-  
न्वितेपुरुषः ॥ युग्मेस्त्रीग्रहदृष्टेस्त्रीबुधयुक्ते  
तुगर्भयुता ॥ ५ ॥

टीका—अधुनाप्रष्टुःप्रश्नकालेवृष्टिज्ञानमाह सौम्याइ-  
ति कर्कमीनमकरकुंभाःजलराशयः सौम्याःशुभग्रहाः

जलराशिपुस्थिताः सितेपक्षेशुक्लेमासाद्धे पुनरयंविशेषः  
तृतीयधनकेन्द्रगा यदिभवन्ति तृतीयद्वितीयलग्नचतुर्थ  
सप्तमदशमानि एतेपुयथासंभवंगताः वाशब्दोन्ययोगा  
पेक्षायाम् अथवाउदयगतेचंद्रेतत्रजलराशिस्थेपृच्छायां  
चवर्षासुवृष्टिप्रवदेत् ॥ ४ ॥ अथगर्भिणीनांकिंजायत-  
इत्येतज्ज्ञानमाह पुंवर्गेति पुंस्त्रीक्रूरावितिराशीनांपुंस्त्री  
संज्ञाजातकेउक्ताः मेषमिथुनसिंहतुलाधन्विकुंभाःपुंराश-  
यः वर्गलक्षणंप्रागुक्तम् पुंवर्गपुरुपराशिवर्गे लग्नगतेता-  
त्काललग्नतांप्राप्ते तस्मिन्पुंग्रहदृष्टेनरग्रहावलोकिते क्लीब-  
पतीबुधसौरौचंद्रसितोयोपितांनृणांशोपाइतिग्रहाणांपुंस्त्री-  
नपुंसकत्वमभिहितं तेनपुंग्रहारविज्ञौमजीवाः एतेषाम-  
न्यतमेनलग्नगतेदृष्टेतस्मिंश्चतथाभूतेलग्नेवलान्वितेवीर्ययु-  
क्तेचपुरुषोजायते अधिपयुतोदृष्टोवाबुधजीवनिरीक्षित  
श्वयोराशिः सभवतिचलवान् यंदादृष्टोपिवाशेपैरितिलग्न-  
बलमुक्तंयुग्मेस्त्रीग्रहदृष्टेइति युग्मेयुग्मराशौस्त्रीसंज्ञकेवृषा-  
दौगतेस्त्रीग्रहौचंद्रसितोताभ्यामन्यतमेनावलोकितेबलपु-

केचस्त्रीकन्याजायते सामान्यप्रश्नलगे बुधयुक्तेबुधेनसंयु-  
क्तेस्त्रीगर्भयुतासगर्भावर्तते अद्यापिप्रसूयतइत्यर्थः ॥ ५ ॥

कुमारिकां बालशशीबुधश्च वृद्धां शनिः सूर्य-  
गुरुप्रसूताम् ॥ स्त्रीकर्कशां भौमसितौ विध-  
त्त एवं वयः स्यात् पुरुषेषु चैवम् ॥ ६ ॥

टीका—अथ प्रष्टुः कीदृशी स्त्री पुरुषो वा चेत्तसि वर्तत इत्ये-  
तत्परिज्ञानमाह कुमारिकामिति शुक्रप्रतिपत्प्रभृतिदश-  
म्यंतया वच्छशी बालः एकादशीप्रभृति कृष्णपंचमीया-  
वद्युवाषष्ठ्याद्यमावास्यांतया वृद्धः तत्र पृच्छालमंय-  
दिस बालशशी बालचंद्रः पश्यति लगेवां तथा भूतः स्थितः त-  
दा प्रष्टुः कुमारिकां वदेत् एवमेव बुधः पश्यति तत्रावस्थि-  
तस्तथापि कुमारिकामर्थादेव यौवनस्थे चंद्रे यौवनोपेतां वृ-  
द्धे वृद्धामिति केचिद्बालां कुमारौ च शशीबुधश्चेति पठं-  
ति शशीबालां करोति आपुष्पं यावत् पुष्पदर्शनं याव-  
दित्यर्थः बालां स्त्रियं बुधः कुमारिकामनूढां करोति एवं  
शनिः सौरो विगतमौवनां जराभिभूतां करोति सूर्योऽर्क

वृहस्पतिः एतौ प्रसूतां प्रसवयुतां स्त्रियं विधत्तः कुरुतः भौमो  
 ऽगारकः सितः शुक्रः एतौ कर्कशामतिदारुणां स्त्रियं कुरुतः  
 एवमनेन प्रकारेण वयःशरीरावस्था स्याद्भवेत् पुरुषेषु चै-  
 वमिति पुरुषेष्वपि पृच्छा समये प्रष्टुः वयोज्ञानमेवमनेन प्रका-  
 रेण वदेत् ॥ ६ ॥

आत्मसमंलग्नगतैर्भ्राता सहजस्थितैः सुतः सु-  
 तगैः ॥ मातावाभगिनीवाचतुर्थगैः शत्रुगैः  
 शत्रुः ॥ ७ ॥ भार्यासप्तमसंस्थैर्नवमेधर्मा-  
 श्रितो गुरुर्दशमे ॥ स्वांशपतिमित्रशत्रुषु  
 तथैव वाच्यं बल्युत्तेषु ॥ ८ ॥

टीका—अथ पृच्छां पृच्छति कस्य संबंधिनी चिंता मे मन-  
 सि वर्तते इत्येतत्परिज्ञानमाह श्लोकद्वयेन आत्मसममिति ग्र-  
 हैरादित्यादिभिः सबलैर्लग्नगतैर्लग्नस्थैः प्रष्टुः आत्मसमंस्व-  
 शरीरतुल्यः कश्चिन्मनसि वर्तत इति तत्कार्यं वक्तव्यमित्ये-  
 वं लग्नमात्सहजस्थितैस्तृतीयगैः भ्राता सुतगैः पंचमस्थानस्थैः  
 पुत्रः पुत्रः चतुर्थगैश्चतुर्यस्थानस्थैर्माता जननी भगिनी चै-

तिवाच्यम् शत्रुगैःपष्ठस्थानस्थैःरिपुर्चिता ॥ ७ ॥ भार्येति  
लगात्सप्तमस्थानाश्रितैःसबलैर्ग्रहैःपत्नीवाच्या नवमेनव-  
मस्थानस्थैर्धर्माश्रितोधर्मयुक्तइतिचिंतावाच्या दशमेगुरु-  
राचार्यइति स्वांशपतिरित्यादि स्वश्वासावंशश्चस्वांश  
आत्मीयो नवभागस्तस्यपतिःस्वामीपृच्छालमेतत्कालंयो-  
नवांशकउदितः तत्पतिर्यदालमस्थोभवति तदाप्रष्टुः आ-  
त्मचिंतेतिवाच्यम् अथस्वांशपतिमित्रंतत्काललमेस्थितं  
तदामित्रंचितितमितिवाच्यम् अथस्वांशपतिशत्रुःरिपु-  
स्तत्कालंलमेस्थितस्तदाशत्रुर्चितागतेतिवाच्यम् अथ-  
निर्दिष्टस्थानेषुद्वौग्रहौबहवोवाभवन्ति तदातेषांमध्यायो  
बलयुतःसयत्रस्थितःतंप्रष्टुःचित्तेगतंस्थितमितिवाच्यम्  
तथैवतेनैवप्रकारेणयथाभिहितेषु बलयुक्तेषु वीर्यवत्सु-  
मध्यात्कार्यंवाच्यम् शत्रूमंदसितौसमश्चशशिजोमित्रा-  
णिरोपारवेरित्यादिनाग्रंथेचजातकेमित्रशत्रुविभागःप्रद-  
र्शितइति ॥ ८ ॥

चरलमेचरभागेमध्याद्धृष्टेप्रवासचिंतास्या-  
त् ॥ अष्टःसप्तमभवनात्पुनर्निवृत्तोयदिनव

(५०) पट्टपञ्चाशिका ।

क्री ॥ ९ ॥ अस्तेरविसितवक्रैः परजायां  
स्वांगुरौ बुधेवेश्याम् ॥ चन्द्रे च वयःशशिव  
त्प्रवदेत्सौरिऽत्यजातीनाम् ॥ १० ॥

टीका—अधुना प्रवासचिंताज्ञानमाह चरलग्ने इति  
चराणां मेपकर्कटतुलामकराणामन्यतमे लग्ने तत्र तत्कालम्  
चरभागे चरनवांशके उदितस्तस्मिंश्चरलग्ने मध्यात्पं  
चमनवांशकात् भ्रष्टेच्युते पठादिकमंशं तत्र वर्तत इत्यर्थः  
प्रष्टुः प्रवासचिंता स्याद्भवेत् प्रवासनिमित्तं चिंता भवेदित्य-  
र्थः अत्रैव निश्चयमाह भ्रष्ट इति सप्तमं भवनं पृच्छालग्न्यात्स-  
प्तमो राशिस्तस्मात् तत्कालं यदि कश्चिद्ब्रह्मो भ्रष्टः प्रच्युतः  
चलितः स च भौमादिकस्तदा प्रवासी पुनर्निवृत्तो निवर्तत इ-  
त्यर्थः प्रवासचिंता तेन किंतु न यास्यति यदि न वक्रीति यो-  
सौ सप्तमं भवनाद्भ्रष्टग्रहः स यदि वक्री प्रतीपगतिर्न भवति त-  
दानि वृत्त एव वाच्यः अथ वक्रीतदा वृत्तो यास्यतीति वाच्य-  
म् ॥ ९ ॥ अथ कीदृश्यास्त्रियासहमे संयोग आसीदित्येतज्ज्ञा-  
नमाह अस्तेरविसितवक्रैरिति रविरादित्यः सितः शुक्रः व-

कौंगारकः एतेषामन्यतमेपृच्छालगनादस्तेसप्तमेस्थानेप-  
रजायांपरपत्नीं परभार्ययासहसंयोगभासीत् एवंगुरौजी-  
वेस्थितेस्वामात्मीयांस्त्रियमितिप्रवदेत् बुधवेश्यांसाधार-  
णस्त्रियंचंद्रेचैवंसाधारणस्त्रियमेववदेत् तथातेनैवप्रकारेण-  
सौरेशनैश्चरेसप्तमेत्यजातीनांनिकृष्टजातीनांस्त्रियमगम्या-  
मितिप्रवदेत् वयःशशिवदिति तासांसर्वासांस्त्रीणांशशि-  
वचंद्रवद्वयःशरीरावस्थांप्रवदेदिति बालचंद्रेबालांयौवनो-  
पेतांवृद्धेवृद्धांचंद्रप्रविभागःप्रागेवदर्शितइति ॥ १० ॥

मंदःपापसमेतोलग्नान्नवमेशुभैरयुतदृष्टः ॥

रोगार्तःपरदेशेचाष्टमगोमृत्युकरएव॥११॥

सौम्ययुतोऽर्कःसौम्यैःसंहृष्टश्चाष्टमर्क्षसंस्थ-  
श्च ॥ तस्माद्देशादन्यंगतःसवाच्यःपिता  
तस्य ॥ १२ ॥

टीका-अथरोगार्तस्यपरदेशस्थितिज्ञानमाह मं-

दइति मंदःमौरःसचपापसमेतोरविभौमक्षीणचंद्राणा-  
मन्यतमेनयुक्तस्तथाभूतो लग्नात्पृच्छालग्नान्नवमे स्थाने



स्थितस्तत्रचशुभैरयुतदृष्टः तत्रचशुभग्रहाणामन्यतमेनयु-  
क्तोनाप्यवलोकितस्तदारोगार्तःरोगोज्वरादिस्तेनार्तःपी-  
डितः परदेशेऽन्यस्मिन्ग्रामादौस्थितःतथाऽनेनैवलक्षणे-  
नयुक्तःसोरोलग्नादष्टमेस्थानेगतःसमवस्थितस्तदातस्यै-  
वरोगार्तस्यमरणंकरोति ॥ ११ ॥ अथकश्चित्पृच्छति-  
मदीयःपितान्यदेशस्थस्तत्रकिमयापितिष्ठति अथवाऽ-  
न्यदेशंगतइतिएतज्ज्ञानमाह सौम्येति अर्कःसूर्यःसौम्ये-  
शुभग्रहैर्युतःसहितस्तेषामन्यतमेनचदृष्टोवलोकितोभवति  
तथाभूतोलग्नाच्चाष्टमर्क्षसंस्थितस्तत्संस्थोष्टमस्थानमुपग-  
तोभवति तस्माद्देशाद्ग्रामादिकादन्यदेशांतरंगतः तस्य  
प्रभुः पिताजनकः प्राप्तइतिवाच्यः अन्यथातत्रैव  
स्थितः ॥ १२ ॥

अंशकाज्ज्ञायतेद्रव्यंद्रेष्काणैस्तस्कराःस्मृ-  
ताः ॥ राशिभ्यःकालदिग्देशावयोज्ञातिश्च  
लग्नपात् ॥ १३ ॥

इति श्रीविराहमिहिरात्मजपृथुयशो-  
विरचितापट्टपञ्चाशिका समाप्ता ॥

टीका—अधुना हतस्यार्थस्य स्वरूपं तत्स्वरकालदि-  
 देशानां ज्ञानं तत्स्वरस्य वयो रूपज्ञानं चाह अंशकादिति  
 अंशकाद्यस्य तात्कालिकस्य नवमभागाद्द्रव्यमपहतं धा-  
 तुमूलजीवारूपं तज्ज्ञायते एतत्पूर्वमेव व्याख्यातम् स्वां-  
 शे विलग्रेयदिवात्रिकोण इति तस्य च राशितुल्यो वर्णो व-  
 क्तव्यः तथा चलघुजातके प्रोक्तम् अरुणसितहरितपाट-  
 लपांडुविचित्रासितेतरपिशंगाः पिंगलकर्बुरवधुकमलि-  
 नारुचयो यथा संख्यमिति तस्य च दीर्घमध्यह्रस्वत्वं न वां-  
 शकवशाज्ज्ञेयम् तेन च कुंभमीनमेपवृषाह्रस्वाः मिथुन-  
 कर्कटधनिवमकरामध्याः सिंहवृश्चिककन्यातुलादीर्घास्त-  
 था चास्मदीये प्रभ्रज्ज्ञाने मेपवृषकुंभमीनाह्रस्वायुगकर्किचा-  
 पधरमकराः मध्याहरियुवतितुलादयः स्मृतादीर्घा इति ह-  
 स्वं परिवर्तुलं मध्यमायतं दीर्घम् अंशकपतौ सवल्लेः आ-  
 सारमल्पवले सुखी नीचस्थितेस्तमिते वापि नष्टप्रायमेव ए-  
 वमंशकाद्द्रव्यं ज्ञायते द्रेष्काणैर्लभत्रिभागेस्तत्स्वराध्वराः  
 स्मृता उक्ताः यादृशी द्रेष्काणस्याकृतिस्तादृशी एव तत्स्व-

रस्यवक्तव्या तद्यथा मेघप्रथमेद्रेष्काणेपुरुषःपरशुहस्तः  
 कृष्णोरक्तनेत्रःरौद्रः द्वितीये द्रेष्काणेष्वीलोहितांवरास्थू-  
 लोदरीदीर्घमुखैकपादा तृतीयेद्रेष्काणेषुमान् क्रूरःकपि-  
 लोरक्ताम्बरःदंडहस्तः वृषस्यप्रथमद्रेष्काणेष्वीकुंचित-  
 लूनकेशास्थूलोदरीदीर्घपादा द्वितीयेनरःकलावित्तांग-  
 लशस्त्रकर्मणिकुशलः तृतीयेनरोबृहत्कायः मिथुनस्य  
 प्रथमद्रेष्काणेष्वीरूपान्विताहीनप्रजा द्वितीयेपुरुषः उषा-  
 नसंस्थितः अपत्यरहितःकवचीधनुष्मान् तृतीयेषुमान्  
 रत्नभूषितःपंडितोधनुष्मान् कर्कटप्रथमेपुरुषः हस्ति-  
 दशशरीरःसूकरमुखः द्वितीयेस्त्रीयौवनापेताकर्कशाभर-  
 ण्यस्या तृतीयेपुरुषः सर्पवेष्टितः नौस्थःसुवर्णाभरणान्वि-  
 तःसिंहप्रथमेशाल्मलीसंस्थोगृध्रमन्तुशुकाननः द्वितीयेपु-  
 रुपोधनुष्मान् नताग्रनासः तृतीयेनरःकूर्चीकुंचितकेशः  
 दंडहस्तः कन्याप्रथमे स्त्रीपुण्ययुता पूर्णेनघटेनोपलक्षिता  
 दग्धांवरा गुरुकुलंवाञ्छति द्वितीयेपुरुषोगृहीतलेखनिः  
 त्रिमोविस्तीर्णकार्मुकः तृतीयेस्त्रीगौराकुंभकुचा घटहस्ता

देवालयेप्रवृत्ता तुलाप्रथमेपुरुषःतुलाहस्तः वीथ्यापणगतः  
उन्नतहस्तःभाण्डं चितयति द्वितीयेपुरुषः कलशधरोगृध्र-  
मुखोक्षुधितस्तृपितश्च तृतीयेपुरुषः दीर्घमुखोधनुष्पाणिः  
वृश्चिकप्रथमेस्त्रीनमास्थानच्युतासर्पनिबद्धपादामनोरमा  
द्वितीयेभर्तृकृतेभुजंगावृतशरीरस्थानमुखान्यमग्निवांछ-  
ति तृतीयेपुरुषश्चिपिटवक्रःधनुःप्रथमेपुरुषोधनुष्मान् द्वि-  
तीयेस्त्रीसुरूपगौरवर्णा तृतीयेपुरुषोदंढहस्तःकूर्ची मकर-  
प्रथमेपुरुषोरोमशःस्थूलदन्तोबंधभृतरौद्रवदनोद्वितीयेस्त्री  
श्यामाऽलंकारान्विता तृतीयेपुरुषः दीर्घमुखोधनुष्मान्  
कुंजप्रथमेपुरुषःगृध्रतुल्यमुखःसकंबलःद्वितीयेस्त्रीरक्तान्ब-  
रा तृतीयेपुरुषःश्यामः मीनप्रथमेद्रेष्काणेपुरुषोनौस्थः  
द्वितीयेस्त्रीगौरानौस्था तृतीयेद्रेष्काणेपुरुषःनग्नःमांससर्प-  
वेष्टितांगःएतद्वृहज्जातकेवराहमिहिरेणप्रोक्तम् एवंद्रेष्काणे  
तस्कराउक्ताइति राशिभ्यउक्ताइति राशिभ्यःकालदि-  
ग्देशाः इति राशीनांकालविभागः मेषायाश्चत्वारःसध-  
न्विमकराःक्षपाबलाज्ञेयाइति जातकेउक्तम् तेनमेषवृष-

मिथुनकर्कटधन्विमकराणामन्यतमेलग्नेसंस्थेरात्रावपह-  
 तम् सिंहकन्यातुलावृश्चिककुंभमीनानामन्यतमेदिवाल-  
 ग्नेस्थितेदिवागतामिति एवंकालदिङ्मेपसिंहधनुषिपूर्वस्यां  
 गतम् वृषकन्यामकरैर्दक्षिणस्यां मिथुनतुलाकुंभैःपश्चिमा-  
 यां कर्कटवृश्चिकमीनैरुत्तरस्यांदिशिगतमिति अथमेप-  
 लग्नेपृच्छाकालेस्थितेमेपेचरेभूमौवृषेतुलादौमिथुनेगीतनृ-  
 त्यस्थानेसंग्रामभूमौवा कर्कटकेजलसमीपे सिंहेअरण्य-  
 भूमौ कन्यायांनीसमीपेतुलायामापणगृहेवृश्चिकेबिलेश्वमे  
 धनुषिसंग्रामेचप्राकारभूमौमकरेजलसमीपे कुंभेशिल्पगृहे  
 भांडोपस्करसमीपे मीनेजलसमीपइति स्वचराश्वसर्वेइति-  
 बृहज्जातकेप्रोक्तम् वयोजातिश्चलग्नपादिति लग्नपात्  
 लग्नेशात् चोरस्यवयःप्रमाणंजातिंचवदेत् तथाचसंहि-  
 तायाम् वयांसितेपांस्तनपानवात्यव्रतस्थितायीवनमध्य-  
 वृद्धाः अतीववृद्धारविचंद्रभौमज्ञशुकवाग्मीनशनेश्वराणा  
 मिति एवंचंद्रेलग्नपतौमिमेतुचतुर्थवर्षाधिकः बुधे  
 ब्रह्मचारीद्वाद

संस्कृतटीकासहिता । ( ५७ )

ध्यवयः स्वपंचाब्दः सूर्ये सप्तत्यब्दः वृद्धः सौरितीव वृद्धः अशी-  
त्यब्दः जातिः ब्राह्मणादिः जीवसितौ विप्राणां क्षत्रस्यारो-  
णगूविशांचंद्रः शूद्राधिपः शशिसुतः शनैश्चरः संकरभवा-  
तामिति ॥ १३ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायां पट्टपंचाशिकावि-  
वृतौ मिश्रकाध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥

---

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-  
खेमराज श्रीकृष्णदास,  
“ श्रीवेंकटेश्वर ” छापाखाना-मुंबई.

# जाहिरात।

## ज्योतिषग्रंथाः ।

नाम.	रु० भा०
शीलावती सान्ध्य भाषाटीका अत्युत्तम ...	१-८
बृहज्जातकसटीक भट्टोत्पली टीकासमेतजिल्द	१-८
बृहज्जातकमहीधररुतभाषाटीका अत्युत्तम...	१-८
वर्षदीपकपत्रीमार्ग ( वर्षजन्मपत्र बनानेका )	०-४
मुहूर्तचिंतामणि प्रमिताक्षरा रफ् रु० १ ग्लेज	१-८
मुहूर्तचिंतामणि पीयूषधारा टीका...	२-८
ताजिकनीलकंठीसटीक तंत्रत्रयात्मक ...	१-०
ताजिकनीलकण्ठी तंत्रत्रयात्मक महीधररुत	
भाषाटीका अत्युत्तम टैपकी छपी ...	१-८
ज्योतिषसार भाषाटीकासहित ...	१-०
मुहूर्तचिंतामणिभाषाटीका महीधररुत ...	१-०
मानसागरीपद्धति ( जन्मपत्रबनानेमेंपरमोपयोगी )	१-०

# जाहिरात.

नाम,

रु० आ०

ग्रहलाघव सान्वय सोदाहरण भाषाटीकासमेत स्पष्ट	
उदाहरण गणिताभ्यासियोंको परमोपयोगी १-४	
जातकसंग्रह ( फलादेश परमोपयोगी ) ...	०-१२
चमत्कारचिंतामणि भाषाटीका ....	०-४
जातकालंकारभाषाटीका ...	०-६
जातकालंकारसटीक ...	०-६
जातकाभरण ...	०-१२
पञ्चचंडेश्वर भाषाटीका ...	०-१२
पंचपक्षी सटीक ...	०-४
पंचपक्षी सपरिहार भाषाटीकासमेत ...	०-६
लघुपाराशरी भाषाटीका अन्वयसहित ...	०-३
मुहूर्तगणपति ❀ ...	०-१२
मुहूर्तमातृद संस्कृत टीका भाषाटीकासहित १-०	
शीघ्रबोधभाषाटीका ...	०-६
षट्पंचाशिका भाषाटीका ...	०-४



# जाहिरात.

क्र.	नाम.	रु० आ०
	शुवनदीपक सटीक ४ आ० भाषाटीका ...	०-८
	जैमिनिसूत्रसटीक चार अध्यायका ...	०-६
	रमलनवरत्न... ..	०-८
	बृहत्पाराशरी ( होरा ) ... ..	६-०
	सर्वार्थचिंतामणि ... ..	०-१२
	लघुजातकसटीक ... ..	०-५
	लघुजातक भाषाटीका ... ..	०-८
	सामुद्रिकभाषाटीका ... ..	०-४
	सामुद्रिक शास्त्र बड़ा सान्वय भाषाटीका ...	१-४
	यवनजातक ... ..	०-२
	पंचांगतिथिपत्र संवत् १९५४ का ...	०-१ ॥
	पंचांग सं० १९५४ पं०महीधरकृत ...	०-४
	पंचांग १० वर्षका (ज्योतिर्विदोंकोलाभदायक )	१-८
	हायनरत्न ... ..	१-८
	अर्धप्रकाश ज्योतिष भाषाटीका इस्में—तेजी	
	मंदी वस्तु देखनेका विचार है ... ..	०-४

# जाहिरात.

नाम.

ख० आ०

तिषकी लावणी	...	...	०--१
नवसन्तराज भाषाटीकासहित इसमें			
नाप्रकारके शकुन वर्णित हैं ऐसा पूर्ण			
कुनका ग्रन्थ और नहीं छपा है	...	...	३--०
पोतभाषाटीका	...	...	०-५
गंडिका मूल ४ आने और भाषाटीका			०-१०
दिसारिणी उदाहरणसहित	...	...	०-८
कुतूहलभाषाटीका (फलादेशउत्तमोत्तमहै)			१-०
योनिधि	...	...	०-२
बोध ( ज्योतिष )	...	...	०-१२
तदैवज्ञविनोद ज्योतिष भाषा—जिसमें			
गोल और खगोल विद्या सूर्यसिद्धांतका			
शहरण और पंचांग बनानेकी पद्धति आ-			
महर्ष्य समर्ष्य चमत्कारी योगों सहित			
और धर्मशास्त्रसहित	...	...	२-०

संकेतनिधि सटीक पं० रामदत्तजीकृत इसमें  
संस्कृत काव्यरचना बहुत सुंदर है, और  
जन्मपत्र देखनेके चमत्कारी योग बड़े  
विलक्षण और अनुभवसिद्धविद्या करके  
विभूषित है

मुकुन्दविजय चक्रों समेत	...	...	१-१
पद्मकोष भाषाटीका ( ज्योतिष )	...	...	०-१
स्वमप्रकाशिका भाषाटीका	...	...	०-२
स्वमाध्याय भाषाटीका	...	...	०-२
परमसिद्धान्त ज्योतिष ( यह ग्रन्थ ज्योतिष- क्रके ज्ञानमें अत्यंत उपयोगी है )	...	...	२-०
विश्वकर्मप्रकाश भाषाटीका	...	...	१-८
विश्वकर्मविद्याप्रकाश [ घर बनानेकी सम्पूर्ण क्रिया वर्णित है ]	...	...	०-६
सूर्यसिद्धान्त संस्कृतटीका और भाषाटीका समेत ( ज्योतिष )	...	...	२-०